संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
अंक : १९५
मार्च २००९

धर्म रक्षा मंच
सभा अध्यक्ष संत श्री आसारामजी बापू

धर्म रक्षा मंच ॐ संकल्पसभा

हम सबका है एक ही नारा
जागे भारत देश हमारा

अब जिहाद का होगा अंत
जनजागरण को निकले संत

हम सबका है एक ही नारा
जागे भारत देश हमारा

अब जिहाद का होगा अंत
जनजागरण को निकले संत

स्थानाभाव के कारण सभी झाँकियाँ नहीं दे पा रहे हैं, उन्हें आगामी अंकों में प्रकाशित किया जायेगा । अन्य अनेक झाँकियाँ आप वेबसाइट **www.ashram.org** पर देख सकते हैं ।

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलगू, कन्नड़ व अंग्रेजी भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : १९ अंक : १९५
मार्च २००९ मूल्य : रु. ६-००
फाल्गुन-चैत्र वि.सं.२०६५-६६

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक	: रु. ६०/-
(२) द्विवार्षिक	: रु.१००/-
(३) पंचवार्षिक	: रु. २२५/-
(४) आजीवन	: रु. ५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक	: US $ 20
(२) द्विवार्षिक	: US $ 40
(३) पंचवार्षिक	: US $ 80

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US$20	US$40	US$80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अतः अपनी राशि मनीऑर्डर या ड्राफ्ट (अमदावाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

संपर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, मोटेरा, अहमदाबाद, पो. साबरमती-३८०००५ (गुजरात)।

ऋषि प्रसाद से संबंधित कार्य के लिए फोन नं. : (०७९) ३९८७७७१४, ६६११५७१४.
अन्य जानकारी हेतु : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८, ६६११५५००.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org

स्वामी : संत श्री आसारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, मोटेरा, अहमदाबाद, पो. साबरमती-३८०००५. गुजरात
मुद्रण स्थल : अरावली प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स (प्रा.) लि., डब्ल्यू-३०, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली-११००२०.
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

अनुक्रमणिका

विचार की शक्ति

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

गाड़ी-मोटर से, जहाज से, एटम बम से भी विचार की शक्ति ज्यादा है। विचारों से एटम बम फोड़े और रोके जाते हैं, खोजे और बनाये जाते हैं इसलिए विचारों की महत्ता है। विचार में जितना भगवान का आश्रय होगा, भगवान को पाने का विचार होगा उतना ही वह सुखदायी होगा। द्वेष का विचार अपनी और दूसरों की तबाही करता है। राग का विचार अपनेको और दूसरे को भोगी बनाता है। ईश्वरप्रीति के उद्देश्य से विचार करने से राग और द्वेष शिथिल हो जाते हैं।

एक विचार मित्रता बना देता है, एक विचार शत्रुता व कलह पैदा कर देता है। एक विचार साधक को गिराकर संसारी बना देता है, एक विचार संसारी को संयमी बनाकर भगवान बना देता है। सिद्धार्थ के एक सुविचार ने उनको संयमी बनाकर भगवान बना दिया। इसलिए सुविचार की बलिहारी है। सुविचार आये तो उसे पकड़ रखना चाहिए।

एक नीच विचार करोड़ों आदमियों को परेशान कर देता है। रावण के एक छोटे विचार ने देखो, पूरी लंका को परेशान कर दिया, बंदरों को परेशान कर दिया। ऐसे ही सिकंदर के, हिटलर के एक नीच विचार ने कई लोगों की बलि ले ली, तबाही मचा दी।

ब्रिटेन के विश्वविख्यात 'कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय' के अंग्रेज प्रोफेसरों ने अब्दुल लतीफ नाम के एक विद्यार्थी को हलकट विचार दिया कि हिन्दुस्तान का कुछ हिस्सा अलग करके पाकिस्तान बनाया जाय। अब्दुल पाकिस्तान के नक्शे बनाकर उसके संबंध में पोस्टर व छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ छापकर भारत में भेजने लगा। पहले तो किसीने उसकी सुनी नहीं। मि. जिन्ना भी दंग रह गये कि यह क्या पागलपन है ! यह संभव ही नहीं है। लेकिन कुविचार को हवा देनेवालों ने ऐसा सत्यानाश कर दिया कि भारत में से कुछ हिस्सा अलग होकर पाकिस्तान बना और अभी तक हम उसका भोग बन रहे हैं। उसीसे आतंक चला और अब भी सज्जन लोग सताये जा रहे हैं। अलग से फौज, अलग से मिसाइलें, अलग से लड़ाई के जहाज... एक ही हिन्दुस्तान के दो हिस्से होके आपस में लड़कर अपनी शक्ति का ह्रास कर रहे हैं। कितने अरबों-खरबों रुपये चट हो गये एक कुविचार के कारण ! उस कुविचार ने उस समय एक करोड़ लोगों को तो बेघर कर दिया था, लाखों निर्दोष लोगों को मौत के घाट उतार दिया, हजारों महिलाओं की इज्जत लूटी व हजारों बच्चों की लाशें गिरा दी थीं।

मेरे गुरुदेव का एक सुविचार कि उस परमात्मा को खोजेंगे, लाखों-लाखों लोगों को भगवान के ज्ञान, सज्जनता व सात्त्विक जीवन से मिला रहा है। लोगों का कितना भला हो रहा है !

सुविचार मिलता है सत्संग से और कुविचार मिलता है भड़कानेवालों से। 'इस्लाम खतरे में... मारो-काटो काफिरों को !' - यह कुविचार है लेकिन बख्तू बीबी ने अपने बेटे को कहा : "बेटा ! इस कुविचार का शिकार मत बनना। हिन्दुओं में भी वही अल्लाह है और मुसलमानों में भी वही राम है। **ईश्वर-अल्लाह तेरे नाम। सबको सन्मति दें भगवान ॥**"

बख्तू बीबी ने अपने बेटे फरीद को ऐसा सुविचार दिया कि वह बाबा फरीद हो गया। अब भी मुझे बख्तू बीबी और बाबा फरीद के लिए सद्भाव है, इज्जत है। गाँधीजी ने 'राजा हरिश्चन्द्र' नाटक देखा और ऊँचा विचार किया कि झूठ नहीं बोलेंगे, परहित करेंगे तो फायदा भी ऐसा हुआ।

सनकादि ऋषियों के ब्रह्मज्ञान के विचार ने नारदजी को 'श्रीमद्भागवत' की तरफ प्रेरित कर दिया। राजा परीक्षित का कल्याण करने के निमित्त श्री शुकदेवजी ने 'भागवत' कही। उनके विचार ने करोड़ों लोगों का भला किया। अब्दुल के कुविचार ने करोड़ों लोगों की तबाही की तो शुकदेवजी और वेदव्यासजी के सुविचार ने करोड़ों लोगों का भला किया। संत तुलसीदासजी के सुविचार ने करोड़ों लोगों को शांति दी, 'रामायण' के रस से आनंदित कर दिया। रामानंद सागर के सुविचार ने हम लोगों को घर बैठे रामायण दिखाया। विचारों की बड़ी भारी महत्ता है। जिसके प्रति द्वेष-विचार आ जाता है उसमें दुर्गुण ही दिखते हैं, राग-विचार आया तो सद्गुण दिखते हैं लेकिन श्रद्धा-विचार आया तो उसमें परमात्मा दिखेंगे। नामदेवजी महाराज को भूत में भी परमात्मा दिखा, जिनको गुरु में भी परमात्मा नहीं दिखते, कैसे हैं उन लोगों के विचार!

अब्दुल लतीफ का पाकिस्तान बनाने का कुविचार अब भी मानव के गले की फाँसी बन बैठा है। इसलिए जो कुविचार देते हैं वे अपने लिए व दूसरों के लिए मुसीबत करते हैं। कुविचार का जहर घोलनेवाले मर-मिट गये हैं लेकिन समाज उनके कुविचारों की पीड़ा से पीड़ित हो रहा है, आतंकित हो रहा है।

एक नूर ते सब जग उपजा, कौन भले कौन मंदे ?

एक ही उस चैतन्य प्रभु से सब उपजे हैं। कुविचार भड़कानेवाले तो चले जाते हैं, फिर न जाने कौन-से नरक में पड़ते हैं लेकिन प्रजा शोषित होती है और सुविचार चलानेवाले तो भगवान को पाते हैं और प्रजा पोषित होती है।

जहाँ सुविचार मिलते हैं उसको सत्संग कहा जाता है और कुविचार मिलते हैं उसको कुसंग कहा जाता है। विचारवान मनुष्य की पहचान है कि वह सत्संग को खोजेगा, सत्पुरुष को देखते-देखते प्रीतिपूर्वक आनंदित हो जायेगा। एकलव्य विचारवान थे, गुरुमूर्ति को देखते-देखते कैसी विद्या जगा ली! ध्रुव विचारवान थे, नारदजी का संग करके कितने महान बन गये! मीरा विचारवान थी, गुरु रविदासजी की कृपा कैसे पचा ली!

छल, छिद्र, कपट मनुष्य को कुविचारी बना देता है, तबाह कर देता है। ये तीन दुर्गुण जिसमें नहीं हैं वह तो संत बन जायेगा। ईश्वर के सिवाय कौन-सी चीज हमारी रहेगी, विचार करके देखो। किसके लिए कपट करना, किसके लिए द्वेष करना, किसके लिए पापकर्म करना ? क्यों दोषारोपण करना ? सब अपने-अपने प्रारब्ध और प्राकृतिक स्वभाव के अनुरूप जीते हैं बेचारे। 'सबका मंगल, सबका भला...' ऐसा विचार करके आदमी सुखी हो जाता है।

जो लोग फरियाद करते रहते हैं : 'ऐसा नहीं है, वैसा नहीं है', वे लोग अपने विचारों से ही अपना गला घोंटते हैं। फरियादात्मक विचार नहीं, ऐसे उन्नत विचार करो जिससे आत्मा-परमात्मा की भूख जगे। गलत विचार करने से सत्यानाश हो जाता है। फरियादात्मक विचार, द्वेषपूर्ण विचार, झगड़ा करने-करानेवाले विचार से तो आदमी की कीमत नष्ट हो जाती है। तोड़नेवाला आदमी खुद ही टूट जाता है। फरियादात्मक विचार व्यक्ति को खिन्न बना देते हैं, तुच्छ बना देते हैं। दुर्जन सज्जन हो जाय, सज्जन को शांति मिले, शांत मुक्तात्मा हो जाय और मुक्तात्मा ब्रह्मज्ञानी दया करके संसारी लोगों के बीच में आयें-जायें, रहें ताकि संसारी ऊपर उठें, नहीं तो पशु की नाईं नीचे गिरेंगे।

विचार करो! मन में जैसा आया ऐसा भजन तो सभी लोग करते हैं। सारी जिंदगी कर-करके बूढ़े होकर, दुःखी होके मर रहे हैं। कौन दुःखों के ऊपर पैर रखकर महान हुआ ? ऐसा विचार करके ऐसे मुक्तात्मा गुरु की शरण में जाओ, ऐसे गुरु से वफादार रहो। वफादारी होगी सद्विचार से, गद्दारी होगी अविचार से। द्वेष होगा अविचार से, समता आयेगी विचार से।

'श्री योगवासिष्ठ' में वसिष्ठजी कहते हैं : ''हे रामजी! विचार से जीव ऐसे पद को प्राप्त होता है जो नित्य, स्वच्छ, अनंत व परमानंदरूप है। उसको

पाकर फिर उसके त्याग की इच्छा नहीं होती है ।

जब ब्रह्मविचार की प्राप्ति हो तब जगत-भ्रम नष्ट हो जाय । कीचड़ का कीट, गर्त का कंटक और अँधेरे बिल में सर्प होना भला है परंतु विचार से रहित होना तुच्छ है ।''

उतना रुदन रोगी और कष्टवान पुरुष भी नहीं करता जितना रुदन विचारहीन व्यक्ति दुःख, पीड़ा, क्लेश, कलह, निंदा, बकबक, झकझक करके परेशान होकर करता है ।

वसिष्ठजी कहते हैं : ''जो पुरुष विचार से रहित होकर भोग में दौड़ता है वह श्वान है ।''

कुत्ते कैसे विचारहीन होकर भौंकते रहते हैं, कितने परेशान होते हैं ! एक कुत्ता भौंके तो उसके सामने दूसरा भी भौंकता है । रात भर दो-तीन गुट बनाकर भौंकते रहते हैं । देखो तो कुछ अर्थ नहीं निकलता । राग-द्वेष से प्रेरित होकर कर्म करना, अपने अहं को पोसना यह विचाररहित होना है । 'अपना अहं ईश्वर में कैसे विसर्जित हो ?'- यह सुविचार है ।

ऐसा विचार करें कि 'मैं कौन हूँ ? यह जगत क्या है ? दुःख किसको होता है ? सुख किसको होता है ? जन्म-मरण क्यों होता है ? जन्म-मरण से पार कैसे होऊँ ? भगवान अपने आत्मा होकर बैठे हैं तो भी मिले नहीं हैं, तो कैसे पायें ?'- ऐसे ऊँचे विचार को पकड़कर लग जाना चाहिए । नीच लोग नीच विचार को पकड़कर लग जाते हैं लेकिन ऊँचे लोग ऊँचे विचार को पकड़कर फिर छोड़ देते हैं, उसमें महत्त्वबुद्धि नहीं रखते !

ऊँचे विचारों में सबसे ऊँचा विचार है आत्मा-परमात्मा को पाने का, उससे ऊँचा और कोई विचार नहीं है । परमात्मा को पाने का विचार हो और अपनी योग्यता के अनुसार साधन करे । अपनी योग्यता के अनुसार साधन आदमी को परम लक्ष्य परमात्मप्राप्ति तक पहुँचा देता है । लेकिन अपनी योग्यता का पता कैसे चले ? भगवान कहते हैं इसके लिए ज्ञानियों के पास जाओ ।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥

'उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ, उनको भलीभाँति दण्डवत् प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म-तत्त्व को भलीभाँति जाननेवाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे ।' (भगवद्गीता : ४.३४) □

दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिता - पुरस्कार वितरण

महाशिवरात्रि शिविर, नासिक में 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिता' राष्ट्रीय स्तर पर सम्पन्न हुई । क्षेत्रीय स्तर पर यह प्रतियोगिता ५३२ शहरों के ५,०६६ विद्यालयों में हुई थी और उसमें ४,४५,३९० विद्यार्थियों ने भाग लिया था ।

राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम १३ विजेताओं ने पूज्यश्री के करकमलों से पुरस्कार प्राप्त किये ।

१. प्रथम विजेता : भूषण कुलकर्णी, उदगीर (महा.)। पुरस्कार : स्वर्ण पदक, २१०० रु. नकद राशि आदि । **क्रमानुसार विजेता :** २. अक्षय ठाकरे, अमरावती (महा.) ३. ज्योतिप्रकाश बेहरा, भुवनेश्वर (उड़ीसा) ४. भाविन परमार, राजकोट (गुज.) ५. दिव्यम् चंद, गोण्डा (उ.प्र.) ६. पार्थ पारीख, अमदावाद (गुज.) ७. श्यामगोविंदा महाजन, धुलिया (महा.) ८. माधव मिश्रा, पटना (बिहार) ९. पुष्पेन्द्र सिंह, कुम्हेर, जि. भरतपुर (राज.) १०. गीता साहू, भुवनेश्वर (उड़ीसा) ११. शिवम् सिंह, कर्वी, जि. चित्रकूट (उ.प्र.) १२. जी. प्रवीण, जहीराबाद, जि. मेडक (आं.प्र.) १३. प्रकाशमणि शिंदे, बीदर (कर्नाटक) ।

राष्ट्रीय स्तर पर कुल ४५० विद्यार्थियों ने सत्साहित्य व प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किये ।

जियो तो ऐसा जियो...

(परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू का अवतरण-दिवस : १५ अप्रैल)

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

अवतरति इति अवतारः... अवतार उसे कहा जाता है जो ऊपर की स्थिति को छोड़कर नीचे आकर सुव्यवस्था जमा दे। जब-जब जहाँ-जहाँ जैसे-जैसे बदलाव की जरूरत होती है, निर्गुण-निराकार भगवान वहाँ प्रकट हो जाते हैं और रामावतार, कृष्णावतार, संत-अवतरण के द्वारा या संत-अंतःकरण का उपयोग करके सुव्यवस्था करते हैं।

धर्म-स्थापन यह रामावतार की विशेषता है। भक्ति और प्रेम-प्रसाद का वितरण यह कृष्णावतार की विशेषता है। शांत परमात्मा में विश्रांति और भक्त को उपदेशमात्र से मोक्ष देनेवाला अवतार शुकदेवजी महाराज का समाधि अवतार माना गया। देवर्षि नारदजी का प्रेमावतार, चलते-फिरते प्रेम-प्रसाद वितरण करनेवाला अवतार माना गया है। दत्तात्रेयजी महाराज का अवधूत अवतार माना गया है और सनत्कुमार आदि का ब्रह्मचर्य अवतार माना गया है।

भगवान का वचन है :

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

'साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पापकर्म करनेवालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ।' **(गीता : ४.८)**

भगवान में कभी भी, कहीं भी, किसी भी आवश्यकता के अनुसार अवतार धारण करने का सामर्थ्य है।

जो भक्त की पुकार सुनकर मदद करने को न आये वह भगवान किस बात का ? जो प्रेमी का प्रेम झेलने को अवतरित न हो वह प्रेमास्पद किस बात का ? जो सृष्टि की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कार्य न कर सके वह सृष्टिकर्ता कैसा ?

कभी मूर्तियाँ दूध पी लेती हैं, कभी मूर्ति में से प्रेरणा मिल जाती है, कभी मंदिर में जाते हैं और मूर्ति के सिर पर से अथवा गले से पुष्प या माला गिर जाती है यह अर्चना अवतार की महिमा है। इस तरह कई अंशावतार, कई आवेश अवतार, कई प्रेरणा अवतार, कई नित्य अवतार और कई नैमित्तिक अवतार माने गये। संतों को नित्य अवतार माना गया है। इस धरती पर कहीं-न-कहीं संत होते रहते हैं और भगवान उनके हृदय में अवतरित होकर समाज को सही ज्ञान का, सही आनंद का बोध देते रहते हैं। संत तुकाराम महाराजजी, नानकदेवजी, कबीरजी, लीलाशाहजी आदि संतों का ऐसा ही अवतरण माना गया है।

भगवान कहते हैं : **जन्म कर्म च मे दिव्यं...** मेरे जन्म और कर्म दिव्य हैं, ऐसा जो मुझे मान लेता है वह भी अपने जन्म और कर्म को दिव्य बना देता है। तो हमें क्या फायदा उठाना है ? यह जो शरीर दिखता है उसका जन्म वास्तव में हमारा जन्म नहीं है और उसके कर्म वास्तव में हमारे कर्म नहीं हैं। ऐसा मानने से राग, द्वेष और वासना से प्रेरित कर्म धीरे-धीरे क्षीण होते जायेंगे। सद्गुरु और शास्त्र प्रेरित कर्म करने से आनंद, समता, शांति और अपना स्वभाव प्रकट होता जायेगा, भगवत्प्रसादजा बुद्धि बनती जायेगी।

भगवत्प्रसादजा बुद्धि को और थोड़ी भूख लग जाय तो तत्त्वप्रसादजा बुद्धि बनकर व्यक्ति ब्रह्मज्ञानी हो जाता है। आप सुबह, दोपहर, शाम उस महान तत्त्व में गोता मारा करें तो आप महान आत्मा बन जायेंगे, यही पुरुषार्थ है मनुष्य-जीवन का।

संतों-महापुरुषों का जन्मदिवस - जयंती अथवा भगवान का अवतरण-दिवस रामनवमी, कृष्ण-जन्माष्टमी आदि मनाते हैं तो इससे हमको, समाज को ही फायदा है, हमारी ही आध्यात्मिक तथा भौतिक उन्नति होती है। मैं अपने लिए जन्मदिवस नहीं मनाता लेकिन तुम लोग केक न काटो इसलिए इस तरह मनाते हैं। जन्मदिवस को माध्यम बनाकर हर वर्ष लाखों बच्चों में प्रेरणादायी सुवाक्यवाली कापियाँ बँटती हैं। सत्रह हजार से भी अधिक चल रहे बाल संस्कार केन्द्रों में भोजन-प्रसाद वितरण, भजन-कीर्तन, अच्छे संस्कारों का सिंचन आदि किया जाता है। बारह सौ से अधिक चल रहीं समितियों में सेवाकार्य करके उत्सव मनाया जाता है।

अवतरण-दिवस का यही संदेश है कि आप 'बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय' कार्य करके स्वयं परमात्मा में विश्रांति पा लो। बाहर से सुख पाने की वासना मिटाओ और सुखस्वरूप में विश्रांति पाते जाओ। समय बहुत तेजी से बीता जा रहा है। पतन का युग बहुत तेज रफ्तार से आगे बढ़ रहा है। उत्थान चाहनेवाले अपना उत्थान कर लो तो कर लो।

पहले बाल-विवाह होता था। एक मुखिया ने अपने बालक के विवाह की व्यवस्था की। अभी **मंगलं भगवान विष्णुः...** शुरू ही हुआ था कि इतने में बाहर डुगडुगी बजी, बंदरियाँ नचानेवाला आया।

बाल दूल्हा उठ खड़ा हुआ, बोला : ''पिताजी ! पिताजी ! मैं तो बंदरियाँ देखने जाता हूँ।''

पिताजी बोले : ''यह क्या करता है ! शादी के फेरे फिर ले।''

वर बोला : ''फेरे तुम फिर लेना, मैं तो बंदरियाँ देखने जाता हूँ।'' और वह बंदरवालों की डुगडुगी सुनकर भागा।

ऐसे ही आप लोग बोलते हो : 'गुरुजी ! तुम पा लेना भगवान को, संसार की डुगडुगियाँ बज रही हैं, हम देखने जा रहे हैं। हम तो केवल आपका जन्मदिवस मनाने आये थे।' अरे नन्हे बच्चे ! हमारा तो कभी जन्म ही नहीं होता जिसको तुम मनाओगे। हमारा कभी जन्म था नहीं, है नहीं, हो सकता नहीं। हाँ, हमारे साधन (शरीर) का जन्म तुम मनाओ। जिस साधन से तुमको फायदा होता है तुम मनाओ, तुम जानो। बाकी हमारा तो कभी जन्म ही नहीं हुआ, गुरु महाराज ने दिखा दिया घर में घर। हम भगवान शिवजी को जल चढ़ाते हैं तो क्या शिवजी को फायदा हो जाता है ? सूरज को अर्घ्य देते हैं तो क्या सूरज को फायदा हो जाता है ? ऐसे ही गुरुओं का जन्मदिन मनाने से गुरुओं को फायदा हो जाता है क्या ? नहीं, यह सब हम अपना मंगल, अपना कल्याण करने के लिए ही करते हैं।

अब तक इन्द्रियों ने मन-बुद्धि को खूब नचाया संसार में। यह संसार का 'मेरा-तेरा' यह सब बंदरियाँ नचाना ही है, और क्या ! बंदरियाँ खूब नचायीं, अब तो भाई ! अपने परमात्म-पद को पा ले। उस दूल्हे-दुल्हन की शादी तो शायद बाद में भी हो लेकिन गुरु इस जीवात्मा की परमात्मा के साथ शादी कराते हैं और तू बंदरियाँ देखने जाता है ! जितना महत्त्व संसार को दे रखा है उतना महत्त्व अगर भगवान की प्राप्ति को दें तो यूँ साक्षात्कार हो जाय और संसार तथा संसार की चीजें पाले हुए कुत्ते की नाईं पीछे-पीछे चलें।

महापुरुषों की जयंतियों से समाज को उत्साह मिलता है, प्रेम मिलता है, सहानुभूति मिलती है, **'परस्परदेवो भव'** की भावना का विकास होता है

और वस्तुओं का सामाजीकरण हो जाता है। जिनको भगवान ने धन-दौलत दी है वे उसे अच्छे काम में लगाते हैं और जिनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है वे सेवा करके अपना काम बना लेते हैं और कुछ लोग उसका उपयोग करके ईश्वर के रास्ते चलते हैं।

आनंदमयी माँ की चौंसठवीं वर्षगाँठ भूलाभाई पार्क, अमदावाद में मनायी गयी थी। माँ ने कहा : ''आप लोग कुछ पूछना चाहें तो पूछ लें।''

माँ से पूछा गया कि ''यह आपका चौंसठवाँ जन्मदिवस है, आज तक आपको क्या-क्या अनुभूतियाँ हुईं और आपके जीवन में क्या-क्या उतार-चढ़ाव आये ?''

माँ ने कहा : ''मेरा तो कोई जन्म ही नहीं हुआ। जन्म होता है देह का और देह के चौंसठ वर्ष हुए हैं। देह के अंदर जो विदेही आत्मा है वह सृष्टि के पहले भी था, अब भी है और देह मरने के बाद भी रहेगा, वह आत्मा मैं हूँ।''

बीते हुए वर्ष की आखिरी घड़ियाँ और आनेवाले वर्ष की शुरुआत के संधिकाल को वर्षगाँठ बोलते हैं। तो बीते हुए वर्ष में हम लोगों की जो-जो आध्यात्मिक उन्नतियाँ हुई हैं, हमसे जो सत्कर्म हुए हैं उनमें बढ़ोतरी करनी चाहिए और हमसे जो गलतियाँ हो गयी हैं उन पर गौर करके, दृष्टि डालकर किन कारणों से वे गलतियाँ हुईं इसे खोजकर उन गलतियों को निकालने का संकल्प करना चाहिए। दुबारा वह गलती न हो यह दृढ़ निश्चय करें। आनेवाले वर्ष के लिए नियोजन कर लें, अपना कुछ लक्ष्य बना लें। कोई बढ़िया लक्ष्य जीवन में नहीं होगा तो जीवन विकसित नहीं होगा। आयुष्य का एक-एक सेकंड जो बीत रहा है वह फिर वापस नहीं आता। आपने पचास वर्ष जिंदगी खर्च करके धन कमाया, मकान लिया, गाड़ी ली परंतु यह सब-का-सब वापस देने के बाद भी पचास घंटे आपका आयुष्य बढ़ नहीं सकता।

मानव जितने श्वास लाया है उतने में अगर आत्मसाक्षात्कार कर लिया तो चाँगदेव की नाईं चौदह सौ साल जीने की भी इच्छा नहीं होगी। जिसने आत्मज्ञान पा लिया उसका दो घड़ी जीना भी सार्थक है और आत्मज्ञान नहीं पाया तो हजार वर्ष जिया तब भी क्या हो गया ! तो तुम भले थोड़ा जियो या अधिक जियो लेकिन ऐसा जियो कि तुम्हारे पदचिह्नों पर चलनेवालों को ईश्वर की भक्ति, ध्यान, प्रेम और सदाचार की शिक्षा-दीक्षा मिले तथा वे जीते-जी जीवन्मुक्त होने की कुंजी पाकर जन्म-मृत्यु से रहित आत्मा के ज्ञान में प्रतिष्ठित हो सकें, जीवन्मुक्त हो सकें। पक्का इरादा करें और भगवत्प्रार्थना, एकांत में भगवद्ध्यान, भगवद्विचार करें। श्रद्धा के साथ बुद्धिमत्ता, बुद्धिमत्ता के साथ श्रद्धा... बस, श्रद्धा और बुद्धिमत्ता कल्याण कर देगी। ❑

'ऋषि प्रसाद' ले जाओ रे भाई

('ऋषि प्रसाद' अभियान गीत)

पश्चिम की ना दाल गलेगी,
अब पुरवइया हवा चलेगी ।
'ऋषि प्रसाद' के शंखनाद से,
ग्यारह में दुनिया बदलेगी ॥
बापू का प्रसाद है आया,
घर-घर में पहुँचाओ रे भाई ।
गुरुकृपा की वर्षा होती,
'ऋषि प्रसाद' ले जाओ रे भाई ॥
स्वस्थ सुखी सम्मानित जीवन,
खुशियों से महके हर आँगन ।
सद्‌गुणों की बहती पुरवाई,
'ऋषि प्रसाद' ले जाओ रे भाई ॥
स्वास्थ्य के सरल ये नुस्खे सस्ते,
डॉक्टर से हमें दूर हैं रखते ।
कर लें हम खुद अपनी दवाई,
'ऋषि प्रसाद' ले जाओ रे भाई ॥
व्रत उपवास करें कब कैसे,
जप तप ध्यान धरें तो कैसे ।
गुरुवर ने है युक्ति बताई,
'ऋषि प्रसाद' ले जाओ रे भाई ॥
बच्चों में संस्कार जगाये,
संयम पर-उपकार सिखाये ।
हर्षित होते बाबा माई,
'ऋषि प्रसाद' ले जाओ रे भाई ॥
ज्ञान के गूढ़ रहस्य सिखाती,
चुटकी में उलझन सुलझाती ।
सात भाषाओं में है छपाई,
'ऋषि प्रसाद' ले जाओ रे भाई ॥
बाँटें लाखों परिवारों में,
चखें करोड़ों दुनिया भर में ।
गुरु प्रसाद की मधुर मिठाई,
'ऋषि प्रसाद' ले जाओ रे भाई ॥
गुरुवर की ये चिट्ठी प्यारी,
जन-जन की अतिशय हितकारी ।
खास आपके नाम है आई,
'ऋषि प्रसाद' ले जाओ रे भाई ॥

- डॉ. विमला मिश्रा ('चाँद' लखनवी) □

हर प्रकार के दर्दी को 'ऋषि प्रसाद' की जरूरत

मैं गिरधारी भाई, आश्रम की सतना (म.प्र.) समिति के अध्यक्ष के रूप में सेवारत हूँ। २ वर्ष पहले मेरा पुराना हलका पाँव का दर्द इतना बढ़ा कि पचास कदम चलना भी मुश्किल हो गया। ऐसा दर्द जो लाखों रुपये खर्च करनेवाले दर्दियों का भी पूर्णरूप से ठीक नहीं हो पाता, वह 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका में छपा प्रयोग करने से बिल्कुल ठीक हो गया। पूज्यश्री की उस सर्वरोगनाशक यौगिक युक्ति के प्रभाव से अब मैं पाँच-दस कि.मी. आराम से चल सकता हूँ। सभी इसका लाभ उठायें। प्रयोग यह था -

अगर शरीर अस्वस्थ हो तो पहले दायें नथुने से श्वास लेकर बायें से छोड़ो, फिर बायें से लेकर दायें से छोड़ो। ऐसा क्रमशः दस बार करो। फिर दोनों नथुनों से श्वास लेकर करीब एक मिनट तक रोकते हुए मन-ही-मन दुहराओ।

नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा॥

फिर श्वास छोड़ो। अब २-३ श्वास स्वाभाविक लो, फिर श्वास बाहर छोड़ो और ४० सेकंड बाहर रोकते हुए उपरोक्त मंत्र दुहराओ। एक बार श्वास अंदर व बाहर रोकने को एक प्राणायाम गिनो, ऐसे दस प्राणायाम करो। दिन में अन्य समय भी इस मंत्र की आवृत्ति करते रहो। जप पद्मासन में बैठकर करो तो अच्छा है, अन्यथा किसी भी आसन में बैठकर कर सकते हो। पवनसुत का मंत्र और पवन को रोकना। हनुमानजी और हनुमानजी के पिता वायुदेव की कृपा का चमत्कार आप देख लेना।

'हर व्यक्ति जो निराश है उसे आशारामजी की जरूरत है' - स्वामी रामदेवजी के इस वचन की तरह यह भी सत्य है कि हर प्रकार के दर्दी को 'ऋषि प्रसाद' की जरूरत है।

- गिरधारी भाई, पुष्पराज कॉलोनी, सतना (म.प्र.)। मो. ९९९३४७२२८८.

शाहों के शाह स्वामी लीलाशाह !

(भगवत्पाद स्वामी श्री श्री लीलाशाहजी महाराज प्राकट्य दिवस : २२ मार्च)

अष्टसिद्धियाँ-नवनिधियाँ और कुबेर का पूरा भण्डार भी आत्मारामी, गुणातीत एवं अनासक्त महापुरुषों के आगे तृण के समान है । उनकी चेष्टाएँ स्वाभाविक, सहज एवं विनोदमात्र होती हैं । भगवत्पाद श्री श्री लीलाशाहजी महाराज के जीवन में घटित घटनाओं से यह सिद्ध होता है कि उनका पूरा जीवन वेदांत का जीता-जागता संदेश है ।

संतश्री नैनीताल में थे उस समय का प्रसंग है । वे रोज सुबह करीब ६ बजे घूमने जाते और ८ बजे तक वापस आ जाते । एक दिन गाँधीधाम के एक करोड़पति सेठ तोलाणी संतश्री के दर्शन के लिए नैनीताल आये । गाँधीधाम में उनके नाम से समाजसेवा के लिए कई संस्थाएँ, पेढ़ियाँ और एक कॉलेज चलता है । उन्होंने आश्रम में आकर स्वामी लीलाशाहजी महाराज के दर्शन की इच्छा जतायी । आश्रम के साधक ने उन्हें गुरुजी के घूमने के नित्यक्रम के बारे में बताया । उस दिन संतश्री सुबह जल्दी ही घूमने निकल गये थे । अतः उनके जल्दी वापस आने की संभावना थी । तोलाणी सेठ तो दर्शन के इंतजार में आठ-साढ़े आठ, नौ-साढ़े नौ बजे तक खड़े-खड़े राह देखते रहे... आखिर दस बजे संतश्री दूर से आते हुए दिखायी दिये । वे सिर पर बबूल और थूहर की लकड़ियों का गट्ठर और हाथ में कमण्डल लेकर मजे से आ रहे थे । अंगद सेवक तो यह देखकर अकुलाया और दौड़ता-दौड़ता गुरुजी के पास जाकर कहने लगा : ''साँईं ! आप यह क्या करते हैं ? तोलाणी जैसे सेठ आपके दर्शन के लिए कब से आपकी राह देख रहे हैं और आपने इतनी देर कर दी ?''

संतश्री ने जवाब दिया : ''आया है तो भले आये, बैठेगा ।''

सेवक : ''यह सब छोड़िये ।''

संतश्री ने धीरे-से कहा : ''क्यों छोड़ूँ ? वहाँ ये सब सूखी लकड़ियाँ पड़ी थीं । हमें भोजन पकाने के काम में आयेंगी इसलिए मैं वहाँ ये लकड़ियाँ इकट्ठी कर रहा था ।''

सेवक : ''साँईं ! तोलाणी जैसे सेठ आपके दर्शन के लिए आये हैं और आप ईंधन के लिए दो पैसे की लकड़ियों का गट्ठर सिर पर उठाके चलकर आ रहे हैं, यह कैसा लगेगा ?''

संतश्री ने कहा : ''मैंने कहाँ उसे बुलाया था ! उससे बोलो चला जाय । मैं तो मौज से आऊँगा ।''

किसी संसारी के आगे यदि ऐसा कोई करोड़पति सेठ आता तो वह उस सेठ का भव्य स्वागत करता, उसे खूब मान देता और उसकी पहचान का लाभ उठाने की सोचता परंतु ब्रह्मज्ञानी संतों के आगे तो गरीब-धनवान, मूढ़-विद्वान सभी समान होते हैं । ऐसे महापुरुषों के लिए शास्त्र कहते हैं :

नित्यं ब्रह्मरसं पीत्वा तृप्तो यः परमात्मनि ।
इन्द्रं च मन्यते रंकं नृपाणां तत्र का कथा ॥

'हमेशा ब्रह्मरस का पान करके जो परमात्मा में तृप्त हो गये हैं वे महापुरुष इन्द्र को भी गरीब मानते हैं तो राजाओं की तो बात ही क्या !'

सेठों की तो बात ही क्या ! ऐसे महात्मा को मनुष्यों के संग की अपेक्षा एकांत, निरभिमानिता, अकिंचनता जैसा सुख देती है वैसा सुख बड़ी समृद्धि या साम्राज्य भी नहीं दे सकते । उन्हें इनका कोई आकर्षण नहीं होता ।

चाह मिटी चिंता गयी, मनवा बेपरवाह ।
जिनको कछू न चाहिए,
वो शाहन के शाह, जय लीलाशाह ॥ □

वाणी के गुण-दोष

वाणी का हमारे जीवन में किस ढंग से प्रयोग हो, किस प्रकार की वाणी का प्रयोग न हो - यह जान लेना और तदनुसार उसका जीवन में प्रयोग करना आवश्यक है । सत्यता, दृढ़ता, मधुरता, संक्षिप्तता, हितकारिता, नम्रता और शिष्टता - ये सात वाणी के गुण हैं । कठोरता, परनिंदा, असत्यता, अश्लीलता, निरर्थकता और अहंकारिता - ये छः वाणी के दोष हैं ।

वाणी के गुण :

(१) सत्यता : संत कबीरजी ने कहा है :

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हिरदय साँच है, ताके हिरदय आप ॥
साँचे श्राप न लागै, साँचे काल न खाय ।
साँचहिं साँचा जो चलै, ताको काह नसाय ॥

जो सत्य बोलता है, सत्य आचरण करता है उसे शाप नहीं लगता अर्थात् उसका अहित चाहनेवाला उसकी सत्यता को नष्ट नहीं कर सकता । सत्य के राही को काल (मृत्यु), कल्पना एवं समय-चक्र कोई हानि नहीं पहुँचा सकता ।

अधिकतर लोगों की यह धारणा है कि 'आजकल सत्य बोलनेवाले की कोई कीमत नहीं होती । हर जगह उसे परेशानी-ही-परेशानी मिलती है । बिना झूठ बोले व्यापार और जीवन चल ही नहीं सकता ।' किंतु यदि सच्चा व्यक्ति अपने आचार, विचार व उच्चार (वाणी) में दृढ़ होता है तो अंत में सभी लोग उसका सम्मान करते हैं, उसकी पदोन्नति होती है, वह एक अच्छा आदर्श स्थापित करता है । ऐसा व्यक्ति सुखी होता है, संतुष्ट होता है ।

सदैव सत्य का प्रचार करें । सत्य की प्रस्थापना करें । सत्य कहने का अभ्यास करें, किसी भी विरोध और धमकी से घबड़ायें नहीं । हमारे ऋषि कहते हैं : **सत्यं वद, धर्मं चर ।** अर्थात् सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो । **साँच को आँच कहाँ ?** कहावत जग-प्रसिद्ध है ।

बेईमान सेठ भी ईमानदार मुनीम चाहता है । बेईमान पति भी ईमानदार पत्नी चाहता है । तो ईमानदार तो ईमानदार की कद्र करते ही हैं लेकिन झूठे भी अपने साथ सच्चाई का सलूक चाहते हैं । क्या आप सच्चा नौकर नहीं चाहते ? अपने दिल पर हाथ रखके बताओ कि आप सच्चे को चाहते हो कि झूठे को ? भगवान भी सच्चे के हृदय में प्रकट होते हैं ।

(२) दृढ़ता : अपने वचनों, प्रतिज्ञाओं एवं वादों के प्रति दृढ़ता होना वाणी की महान विशेषता है । जिसमें यह गुण है वह बात का धनी कहा जाता है, उसकी वाणी मूल्यवान मानी जाती है, लोक में उसकी प्रतिष्ठा होती है । जो अपने प्रतिज्ञा-पालन में दृढ़ नहीं होते वे लक्ष्यच्युत होकर दुःखी होते हैं । उन्हें लोग हेय दृष्टि से देखते हैं और उन पर कोई विश्वास नहीं करता । वचन देने में जल्दबाजी न करें और वचन पूरा करने में भूल न करें । 'फिर मिलेंगे' सोचकर बोलो, नहीं तो 'हरि इच्छा' बोलो । ऐसा न बोलो जिससे आप झूठे साबित हों । वचन-पालन में दृढ़ न रहनेवाले लोग कोई नेतृत्व नहीं कर सकते तथा अपने अभीष्ट लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सकते । ऐतिहासिक एवं प्रागैतिहासिक काल में वर्णित, जहाँ तक हमें जानकारी मिलती है, सभी महापुरुष दृढ़प्रतिज्ञ रहे हैं ।

विषम परिस्थितियों में भी अपने वचन में दृढ़ता मनुष्य को सुकीर्ति प्रदान करती है। यदि आप चाहते हैं कि लोग आप पर विश्वास करें, आपका परिवार या संघ एकता, समता और प्रेम के सूत्र में बँधे, यदि आप चाहते हैं आपका व्यवहार सुंदर हो, यदि आप चाहते हैं आपका मन प्रफुल्लित रहे, यदि आप चाहते हैं कि आपकी वाणी का सर्वत्र आदर हो तो वादे के सच्चे रहें, अपने वचन पर अटल रहें। किसी प्रलोभन या दबाव के सामने झुकें नहीं, आपकी सत्यनिष्ठा व वचननिष्ठा ही अमोघ अस्त्र का काम करेगी।

(३) मधुरता : वाणी में मधुरता की अतीव आवश्यकता है। मधुर वाणी से ही हम दूसरों से मधुर व्यवहार स्थापित कर सकते हैं अथवा किसीका सुधार कर सकते हैं।

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय॥
तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर।
वशीकरण यह मंत्र है, तजि दे वचन कठोर॥

आप कितने ही पुरुषार्थी और अनेक योग्यताओं, उपाधियों से विभूषित क्यों न हों, किंतु यदि आपकी वाणी में मधुरता नहीं है तो भले ही लोग स्वार्थ या भयवश आपका आदर करें, आज्ञा मानें किंतु उनमें हृदय से आपके प्रति प्रेम, सद्भावना, श्रद्धा और स्नेह नहीं उपज सकते, आप लोकप्रिय नहीं हो सकते। इसके विपरीत अनेक प्रकार की भौतिक अयोग्यताएँ होने पर भी मधुरवक्ता या मृदुभाषी सर्वत्र लोकप्रिय होता है। तभी तो लोग किसी प्रियभाषी की वाणी सुनकर कहते हैं कि अमुक व्यक्ति जब बोलता है तब उसके मुख से मानो फूल झड़ते हैं। वाणी की मृदुता, मधुरता सर्वप्रिय होती है, अतः मधुरभाषी बनें। आपकी मधुर वाणी सत्य, निष्कपटता, निःस्वार्थता के भावों से ओतप्रोत हो तो सोने में सुहागा है, ऐसी वाणी ही अनमोल धन है।

कागा काको धन हरै, कोयल काको देत।
मीठा शब्द सुनाय के, जग अपनो करि लेत॥

(४) संक्षिप्तता : आप जो कुछ कहना चाहते हैं उसे संक्षेप में कहें, इससे सुननेवाला ऊबेगा नहीं। अधिक विस्तार से बोलने में समय अधिक लगता है और कभी-कभी मूल बात छूट जाती है। जो अपने कथन को जितने ही कम समय में और कुशलता के साथ समझा पाने में समर्थ होता है वह उतना ही कुशलवक्ता माना जाता है। 'लेकिन... इसने... उसका... फलाना...' - व्यर्थ का विस्तार मूर्खता की पहचान देता है और दिमाग की कमजोरी बढ़ाता है।

आज की आपाधापी की दुनिया में बहुत लोग मशीन की तरह यांत्रिक जीवन जी रहे हैं। किसीको प्रायः इतनी फुरसत नहीं है कि वह आपकी बात अधिक देर तक सुन सके। अधिक बोलने से ओज, वीर्य और मज्जा खर्च होती है। अतः संक्षिप्त और सारगर्भित बोलना चाहिए।

अति सर्वत्र वर्जयेत्। अति सर्वत्र दुःखदायी है। कम बोलनेवाला विवाद, कलह, निंदा आदि दोषों से बच जाता है। अतः मितभाषिता सर्वत्र सुखदायी है।

कौन क्या बोलता है, कितना बोलता है, यह उसकी वाक्य-क्षमता और अनुभव पर निर्भर करता है। कोई अधिक देर तक बोलकर भी जन-मन पर प्रभाव नहीं डाल पाता और कोई कम बोलकर भी जन-मन को आकर्षित कर लेता है। यदि हमारा कथन आचरणयुक्त होगा तो अवश्य ही वह लाभकारी होगा।

(५) हितकारिता : वाणी सत्य, प्रिय, मित के साथ-साथ हितकारी भी हो। धोखाधड़ीवाले भी मीठी बात करते हैं लेकिन उसकी कोई कीमत नहीं होती। भीतर स्वार्थ और धोखा भरा हो ऐसी मीठी वाणी किस काम की ? अतः मनुष्य को

विषम परिस्थितियों में भी अपने वचन में दृढ़ता मनुष्य को सुकीर्ति प्रदान करती है । यदि आप चाहते हैं कि लोग आप पर विश्वास करें, आपका परिवार या संघ एकता, समता और प्रेम के सूत्र में बँधे, यदि आप चाहते हैं आपका व्यवहार सुंदर हो, यदि आप चाहते हैं आपका मन प्रफुल्लित रहे, यदि आप चाहते हैं कि आपकी वाणी का सर्वत्र आदर हो तो वादे के सच्चे रहें, अपने वचन पर अटल रहें । किसी प्रलोभन या दबाव के सामने झुकें नहीं, आपकी सत्यनिष्ठा व वचननिष्ठा ही अमोघ अस्त्र का काम करेगी ।

(३) मधुरता : वाणी में मधुरता की अतीव आवश्यकता है । मधुर वाणी से ही हम दूसरों से मधुर व्यवहार स्थापित कर सकते हैं अथवा किसीका सुधार कर सकते हैं ।

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय ॥
तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर ।
वशीकरण यह मंत्र है, तजि दे वचन कठोर ॥

आप कितने ही पुरुषार्थी और अनेक योग्यताओं, उपाधियों से विभूषित क्यों न हों, किंतु यदि आपकी वाणी में मधुरता नहीं है तो भले ही लोग स्वार्थ या भयवश आपका आदर करें, आज्ञा मानें किंतु उनमें हृदय से आपके प्रति प्रेम, सद्भावना, श्रद्धा और स्नेह नहीं उपज सकते, आप लोकप्रिय नहीं हो सकते । इसके विपरीत अनेक प्रकार की भौतिक अयोग्यताएँ होने पर भी मधुरवक्ता या मृदुभाषी सर्वत्र लोकप्रिय होता है । तभी तो लोग किसी प्रियभाषी की वाणी सुनकर कहते हैं कि अमुक व्यक्ति जब बोलता है तब उसके मुख से मानो फूल झड़ते हैं । वाणी की मृदुता, मधुरता सर्वप्रिय होती है, अतः मधुरभाषी बनें । आपकी मधुर वाणी सत्य, निष्कपटता, निःस्वार्थता के भावों से ओतप्रोत हो तो सोने में सुहागा है, ऐसी वाणी ही अनमोल धन है ।

कागा काको धन हरै, कोयल काको देत ।
मीठा शब्द सुनाय के, जग अपनो करि लेत ॥

(४) संक्षिप्तता : आप जो कुछ कहना चाहते हैं उसे संक्षेप में कहें, इससे सुननेवाला ऊबेगा नहीं । अधिक विस्तार से बौलने में समय अधिक लगता है और कभी-कभी मूल बात छूट जाती है । जो अपने कथन को जितने ही कम समय में और कुशलता के साथ समझा पाने में समर्थ होता है वह उतना ही कुशलवक्ता माना जाता है । 'लेकिन... इसने... उसका... फलाना...' - व्यर्थ का विस्तार मूर्खता की पहचान देता है और दिमाग की कमजोरी बढ़ाता है ।

आज की आपाधापी की दुनिया में बहुत लोग मशीन की तरह यांत्रिक जीवन जी रहे हैं । किसीको प्रायः इतनी फुरसत नहीं है कि वह आपकी बात अधिक देर तक सुन सके । अधिक बोलने से ओज, वीर्य और मज्जा खर्च होती है । अतः संक्षिप्त और सारगर्भित बोलना चाहिए ।

अति सर्वत्र वर्जयेत् । अति सर्वत्र दुःखदायी है । कम बोलनेवाला विवाद, कलह, निंदा आदि दोषों से बच जाता है । अतः मितभाषिता सर्वत्र सुखदायी है ।

कौन क्या बोलता है, कितना बोलता है, यह उसकी वाक्य-क्षमता और अनुभव पर निर्भर करता है । कोई अधिक देर तक बोलकर भी जन-मन पर प्रभाव नहीं डाल पाता और कोई कम बोलकर भी जन-मन को आकर्षित कर लेता है । यदि हमारा कथन आचरणयुक्त होगा तो अवश्य ही वह लाभकारी होगा ।

(५) हितकारिता : वाणी सत्य, प्रिय, मित के साथ-साथ हितकारी भी हो । धोखाधड़ीवाले भी मीठी बात करते हैं लेकिन उसकी कोई कीमत नहीं होती । भीतर स्वार्थ और धोखा भरा हो ऐसी मीठी वाणी किस काम की ? अतः मनुष्य को

सदैव प्रिय और हितकर वाणी ही बोलनी चाहिए।

(६) नम्रता : जब तक जीवन है, हमें नम्रतापूर्वक बोलना, बैठना, चलना एवं अन्यान्य व्यवहार करना चाहिए। जो अहंकारपूर्वक बोलता व व्यवहार करता है वह दुःखी रहता है, जबकि विनम्र व्यक्ति सर्वत्र आदर पाता है, सुखी रहता है।

महान वैज्ञानिकों, विद्वानों, संतों, ऋषियों, मनीषियों, महापुरुषों एवं नारियों में यदि कोई सर्वाधिक अनुकरणीय गुण है तो वह है उनकी वाणी की सत्यता, निरहंकारिता और विनम्रता। अतः सर्वत्र विनम्र बनें।

(७) शिष्टता : अपने से श्रेष्ठ लोगों से मिलते समय अत्यंत संयत एवं शिष्ट शब्दों के साथ उनका अभिवादन करें, समकक्ष लोगों से प्रेम के साथ मिलें तथा छोटों को स्नेह दें। शिष्टाचार में कभी पीछे मत रहें। कोई हमसे मिलने आया तो यह नहीं सोचना चाहिए कि जब वह हमसे हाथ जोड़कर नमस्कार करेगा या अपनी तरफ से बोलेगा तभी हम बोलेंगे, अपितु अपनी ओर से स्नेह बरसाते हुए स्वयं बात शुरू करें। स्वयं उससे शिष्टतापूर्वक कुशल-क्षेम पूछें और यथाशक्ति सेवा-सहयोग करें क्योंकि हम भी कहीं जाते हैं, किसीसे मिलते हैं तो उसकी शिष्टता हमें प्रिय लगती है।

जिस परिवार, ग्राम, समाज, विद्यालय, न्यायालय, संस्थान या सभा में लोग शिष्टता के साथ नहीं बोलते वहाँ प्रेम, न्याय, एकता, संगठन और मानवता के मूल सिद्धांत स्थिर नहीं रह सकते। वहाँ राग-द्वेष, हिंसा का ही साम्राज्य होगा, सुख-शांति वहाँ गूलर का फूल हो जायेगी। अतः शिष्ट वाणी बोलिये, शिष्टता के साथ पेश आइये।

श्रीरामजी में अपने बड़प्पन का अहं नहीं था। बड़े लोगों में अपने बड़प्पन का अहं नहीं होता, यही उनका असली बड़प्पन होता है। **(क्रमशः)** ❐

आध्यात्मिक दृष्टि में रामायण

(श्रीराम नवमी : ३ अप्रैल २००९)

(परम पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

जिस व्यक्ति के जीवन से, जिस समाज के जीवन से, जिस नगर या राज्य से, जिस देश या राष्ट्र से ब्रह्मविद्यारूपी सीता माता विदाई लेती हैं उसका बुरा हाल हो जाता है। उनके यहाँ दुःख, बेचैनी, कठिनाइयाँ, शोक, खिन्नता और विपत्तियाँ आ जाती हैं। जब ब्रह्मविद्यारूपी माँ सीता को वापस लाने के लिए श्रीरामजी संकल्प करते हैं तो प्रकृति उनके अनुकूल हो जाती है। हवाएँ उनके अनुरूप बहती हैं, पत्थरों ने भी अपना वजन कम करके सेतुबंध रामेश्वर के पुल का निर्माण किया। चंचल बंदर भी अनुशासित होकर युद्ध करने की योग्यता अपने में निखार लेते हैं। यहाँ प्रकृति की सुंदर व्यवस्था का दर्शन होता है कि परमात्म-ज्ञान देनेवाली माँ सीता की तरफ जो चलता है उसको कदम-कदम पर सहयोग मिलता है। पठित-अपठित, रीछ और बंदर तो क्या, अरे, गिलहरियाँ भी ब्रह्मविद्या को लाने का संकल्प करनेवाले श्रीरामजी के पक्ष में काम करके अपना भाग्य बना लेती हैं। हे मानव ! तू भी अपने जीवन में उस ब्रह्मविद्या ला, जिस विद्या से मुक्ति का अनुभव होता है, जिस विद्या से **'सबमें एक और एक में सब'** के दर्शन हो जाते हैं।

जब आत्माराम की वे अर्द्धांगिनी ब्रह्मविद्यारूपी माँ सीता आ गयीं तो आत्माराम का राज्य अयोध्या नगरी में होने लगता है। तुम्हारे तनरूपी अयोध्या में, इस नौ द्वारवाली देह में दस इन्द्रियों में रत रहनेवाला यह जीव दशरथ है। इसकी तीन रानियाँ हैं - सात्त्विक वृत्ति कौसल्या, राजसी वृत्ति सुमित्रा और तामसी वृत्ति कैकेयी। दस इन्द्रियों में रमण करनेवाला यह जीव चाहता है कि मुझे आत्म-अमृत मिले, दशरथ चाहते हैं कि रामराज्य हो लेकिन तामसी वृत्ति के चक्कर में आकर वे राम को राज्य सौंपने के बदले वनवास भेज देते हैं। राम वनवास चले जाते हैं तो दस इन्द्रियों में रमण करनेवाले जीव दशरथ की दुःखद दशा होती है। छटपटाकर यह जीव बेचारा मर जाता है, फिर जन्मता है और फिर छटपटाकर मर जाता है। जब तक इस देहरूपी अयोध्या में रामराज्य नहीं होता, तब तक सुख, शांति, तृप्ति नहीं होती, अमृत की प्राप्ति नहीं होती।

अतः तुम आत्मविद्या को अपने जीवन में लाने का संकल्प करो तो प्रकृति तुम्हारे अनुकूल होगी क्योंकि अद्वैत ज्ञान सारे दुःखों का अंत कर देता है। इस ज्ञान के अनुरूप आचरण करो तो घृणा, ग्लानि, सारे भय, शोक, मोह और मुसीबतें दूर हो जाती हैं। जिन-जिन व्यक्तियों के जीवन में अद्वैत व्यवहार, अद्वैत ज्ञान है उन-उन व्यक्तियों के जीवन में सुख है, शांति है, माधुर्य है, प्रसन्नता है, सफलता है; प्रकृति हर कदम पर उनको सहायता पहुँचाती है। पर जिनके चित्त में अद्वैत की उपेक्षा है, देह को ही 'मैं' मानते हैं और देह के काम में आनेवाली वस्तुओं से चिपक जाते हैं उनको फिर कंस की, रावण की, हिटलर और सिकंदर की पंक्ति में रखकर प्रकृति परेशानी का अनुभव कराती है। परेशानी का अनुभव कराकर भी अद्वैत ज्ञान का पाठ पढ़ाती है। ऐसे व्यक्तित्ववाले रावण को हर साल में दे दियासलाई और भगवान राम की प्राकट्य-तिथि हर राम नवमी को '**श्रीरामचंद्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणम्।**' करते हैं। जो अपने जीवन में ब्रह्मविद्या लाते हैं वे ब्रह्मस्वरूप श्रीराम बन जाते हैं फिर उनका नाम चाहे कबीरजी रख दो, रामानंदजी रख दो, लीलाशाहजी रख दो, नानकजी रख दो, वे राम की तरह पूजे जाते हैं। जिन्होंने अपने जीवन में ब्रह्मज्ञान का आश्रय लिया वे पूजनीय हो गये। जहाँ द्वैत है वहाँ भय है, द्वेष है, कलह है, दुःख-दरिद्रता है, शोक है, वहाँ जन्म-मृत्यु, जरा-व्याधियाँ हैं और जहाँ अद्वैत ज्ञान है, जहाँ सीता माता सहित श्रीराम अयोध्या में आते हैं वहाँ उत्सव हो जाता है। दीये जलते हैं, मिठाइयाँ बँटती हैं और रामराज्य में सब सुखी होते हैं। आपके चित्त में भी राम का राज्य हो यही राम नवमी का संदेश है।

जीवन भर घोर शत्रुता रखनेवाला रावण भी मृत्यु के समय जिनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहता है ऐसे रामजी का, शत्रु में भी गुण देखनेवाले श्रीरामजी का, प्राणिमात्र के हितकारी भगवान श्रीरामजी का अवतरण-दिवस है राम नवमी। उन राम के स्वरूप को वही जानता है जिस पर वे प्रसन्न होते हैं। सामान्य प्रसन्नता तो भगवान की है लेकिन ऐसे कर्म और ऐसी तड़प पैदा करो कि उनकी विशेष प्रसन्नता छलके। वे राम आपके और हमारे हृदय के अधिष्ठान हैं। जैसे हर तरंग का अधिष्ठान पानी है, ऐसे ही हर हृदय का आधार हृदयेश्वर है। उन सच्चिदानंद प्रभु को प्रार्थना करो कि 'हे प्रभु ! आपके लिए प्यास पैदा हो जाय' फिर तो तुम्हें बारह महीने में एक राम नवमी का इंतजार नहीं करना पड़ेगा, जब गोता मारा तब राम नवमी, जब गोता मारा तब राम-प्राकट्य। इसलिए आप उस ब्रह्मविद्यारूपी सीता का आश्रय लीजिये। यह कोई जबरन नहीं कह रहे हैं, प्रकृति

के हर नियम में अद्वैत सत्ता ही काम कर रही है।

एक राम घट-घट में बोले,
दूजो राम दशरथ घर डोले।
तीसर राम का सकल पसारा,
ब्रह्म राम है सबसे न्यारा ॥

एक चेले को यह उपदेश मिला। भजन करते-करते उसका ओज-तेज, सूझबूझ बढ़ी। जप, तप, ध्यान करते-करते विचार आया कि 'भगवान एक हैं फिर चार कैसे हुए ? चार भगवान मानना भी व्यावहारिक है लेकिन बोलते हैं कि **एकमेव अद्वितीय ब्रह्म...** गुरुजी से पूछे बिना इसका निराकरण नहीं होगा।' उस सात्त्विक जिज्ञासु ने श्रद्धा-भक्ति से गुरुदेव के चरणों में प्रणाम करके कहा : ''गुरुदेव ! आपकी बात तो सत्य है मगर मेरी समझ में नहीं आती।''

यह नहीं बोलता कि 'यह नहीं हो सकता।' यह मूर्खों की भाषा है। साधक बोलता है : 'गुरुजी ! है तो आपकी बात सत्य, मगर मुझे समझ में नहीं आती, मेरी बुद्धि में प्रवेश नहीं करती।'

गुरुजी ने देखा उत्तम जिज्ञासु है, समझदार है। गुरुजी बोले : ''व्यवहार-दृष्टि से उपाधियाँ हैं तो राम चार भी दिखेंगे और चालीस भी दिख सकते हैं। ४० करोड़ और ४० अरब भी दिख सकते हैं। जैसे घड़े में आया हुआ आकाश 'घटाकाश', किसी मकान या मठ में आया हुआ आकाश 'मठाकाश', बादलों में आया हुआ आकाश 'मेघाकाश' है और उन सबसे जो न्यारा है वह 'महाकाश' है। तो चार आकाश हुए उपाधि को स्वीकार करने से।

तात्त्विक दृष्टि से सब एक है, महाकाश और घटाकाश एक है, जीवात्मा और परमात्मा एक है, अवतार और ब्रह्म एक है। सृष्टिकर्ता, जीव और अवतार इन सबका अधिष्ठान एक ही सच्चिदानंद, ज्ञानस्वरूप, अकाल पुरुष परमात्मा है। राम का साकार रूप अभी नहीं है लेकिन राम के चित्त में जो रम रहा था वह अब भी तुम्हारे चित्त में रम रहा है।''

श्रीरामजी विरक्तों को उपदेश देते हैं कि अगर संसार का सुख गृहस्थ जीवन में आये तो भगवान को भी रोना पड़ता है और विघ्न-बाधाओं में आना पड़ता है और गृहस्थियों को उपदेश दिया है कि अगर अपनी पत्नी संकट में है तो सेतुबंध रामेश्वर का पुल भी बनाओ, रावण से भिड़ना पड़े तो भिड़ो और 'हाय सीते-सीते !' करके उसके लिए विलाप करना पड़े तो करो। अपना कर्तव्य निभाओ। गृहस्थियों को कर्तव्य निभाने का और विरक्तों को त्याग का उपदेश देनेवाला यह रामावतार है।

सात्त्विक बुद्धि और पवित्र मन इन दो के मेल से दस इन्द्रियों में रमण करनेवाला यह जो जीव है, ब्रह्मरूप में, रामरूप में प्रकट होता है, यही रामावतार की आध्यात्मिक दृष्टि है। भगवान श्रीरामजी का आचरण, चरित्र और लीलाएँ मानव-समाज के लिए आदर्श हैं, अनुकरणीय हैं। □

विशेष सूचना

सूचित किया जाता है कि 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका की सदस्यता के नवीनीकरण के समय पुराना सदस्यता क्रमांक/रसीद क्रमांक एवं सदस्यता 'पुरानी' है - ऐसा लिखना अनिवार्य है। सदस्यता की शुरुआत किस माह से करनी है यह भी अवश्य लिखें। जिसकी रसीद में ये नहीं लिखे होंगे, उस सदस्य को नया सदस्य माना जायेगा। आजीवन सदस्यों के अलावा नये सदस्यों की सदस्यता एक माह पूर्व से शुरू की जायेगी तथा सदस्यता के अंतर्गत उन्हें एक पूर्व-प्रकाशित अंक भेजा जायेगा।

सफलता का रहस्य

(गतांक से आगे)

हम जितना बाह्य साधनों से किसीको वश करना चाहते हैं, दबाना चाहते हैं, सफल होना चाहते हैं उतने ही हम असफल हो जाते हैं । जितना-जितना हम अंतर्यामी परमात्मा के नाते व्यवहार करते हैं उतना हम स्वाभाविक तरह से सफल हो जाते हैं और निष्कंटक भाव से हमारी जीवनयात्रा होती रहती है ।

अपनेको पूरे-का-पूरा ईश्वर में अर्पित करने का मजा तब तक नहीं आ सकता जब तक संसार में, संसार के पदार्थों में महत्त्वबुद्धि, आसक्ति रहेगी । 'इस कारण से यह हुआ... उस कारण से वह हुआ...' ऐसी बुद्धि जब तक बनी रहेगी तब तक ईश्वर में समर्पित होने का मजा नहीं आता । कारणों के भी कारण अंतर्यामी से एक होते हो तो तमाम परिस्थितियाँ आपके अनुकूल बन जाती हैं । अंतरतम चैतन्य से संबंध बिगाड़ते हो तो परिस्थितियाँ प्रतिकूल हो जाती हैं । अतः अपने चित्त में बाह्य कार्य-कारण का प्रभाव मत आने दो । कार्य-कारण के सब नियम माया में हैं । माया ईश्वर की सत्ता से है । आप ईश्वर-सत्ता से मिल जाओ, बाकी का सब ठीक होता रहेगा ।

न्यायाधीश आपके लिए फैसला लिखने जा रहा है । आपके लिए फाँसी या कड़ी सजा का विचार कर रहा है । उस समय भी आप अगर ईश्वर को पूर्णतः समर्पित हो जाओ तो न्यायाधीश से वही लिखा जायेगा जो आपके लिए भविष्य में अत्यंत उत्तम होगा । चाहे वह आपके लिए कुछ भी सोचकर आया हो, आपका आपस में विरोध भी हो, तब भी उसके द्वारा आपके लिए अमंगल नहीं लिखा जायेगा क्योंकि मंगलमूर्ति परमात्मा में आप टिके हो न ! जब आप देह में आते हो, न्यायाधीश के प्रति दिल में घृणा पैदा करते हो तो उसकी कोमल कलम भी आपके लिए कठोर हो जाती है । आप उसके प्रति आत्मभाव से, 'न्यायाधीश की गहराई में मेरा प्रभु बैठा है, मेरे लिए जो करेगा मंगल ही करेगा' - ऐसे दृढ़ भाव से उसे निहारोगे तो उसके द्वारा आपके प्रति मंगल कार्य ही होगा ।

बाह्य शत्रु-मित्र में सत्यबुद्धि रहेगी, 'इसने यह किया, उसने वह किया इसलिए ऐसा हुआ' - ऐसी चिंता-फिक्र में रहे तब तक धोखे में रहोगे । जब तक सबका मूल कारण ईश्वर प्रतीत नहीं हुआ तब तक मन के चंगुल में हम फँसे रहेंगे । अगर हम असफल हुए हैं, दुःखी हुए हैं तो दुःख का कारण किसी व्यक्ति को मत मानो । अंदर जाँचो कि आपको जो प्रेम ईश्वर से करना चाहिए वह प्रेम उस व्यक्ति के बाह्य रूप से तो नहीं किया ? इसीलिए उस व्यक्ति के द्वारा धोखा हुआ है । जो प्यार परमात्मा को करना चाहिए वह प्यार बाह्य चीजों के साथ कर दिया इसीलिए उन चीजों से आपको दुःखी होना पड़ा है ।

सब दुःखों का कारण एक ही है । ईश्वर से जब आप अपना नाता बिगाड़ते हो तभी फटका लगता है, अन्यथा फटके का कोई सवाल ही नहीं है । जब-जब दुःख आ जाय तब-तब समझ लो कि 'मैं भीतरवाले अंतर्यामी ईश्वर से नाता बिगाड़ रहा हूँ ।' 'इसने ऐसा किया... उसने वैसा किया... वह रहेगा तो मैं नहीं रहूँगा...' ऐसा बोलना-समझना केवल बेवकूफी है । 'मेरी बेवकूफी के कारण 'यह-वह' दिखता है परंतु मेरे प्रियतम परमात्मा के सिवा तीनों कालों में कुछ हुआ ही नहीं है' - ऐसी समझ खुले तो बेड़ा पार हो ।

(आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'जीवन विकास' से क्रमशः) ❑

धर्म रक्षा मंच

सम्पूर्ण भारतवर्ष से भारतीय संस्कृति के संवाहक हिन्दू, जैन, बौद्ध आदि धर्मों के धर्माचार्यों ने तथा विश्व हिन्दू परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आदि संगठनों ने एकजुट होकर 'धर्म रक्षा मंच' की स्थापना की तथा समस्त विश्व का मंगल चाहनेवाली भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म की रक्षा हेतु सामूहिक प्रयास करने का संकल्प लिया। दिनांक २९ जनवरी २००९ को मुंबई के विशाल सोमैया मैदान में इस मंच ने 'संकल्प सभा' का आयोजन किया, जिसमें भारत के विभिन्न क्षेत्रों के धर्माचार्यों, प्रमुख संतों-महंतों, अखाड़ों के प्रमुख साधुओं एवं शंकराचार्यों की उपस्थिति रही। इतिहास में सम्भवतः ऐसा पहली बार हुआ है जब हिन्दू धर्म के अनेक सम्प्रदाय, सभी अखाड़े, जैन, बौद्ध आदि भारतीय संस्कृति के विभिन्न अंग एक ही मंच पर उपस्थित हुए।

इस ऐतिहासिक सभा की अध्यक्षता के लिए सभी संतों ने सर्वसम्मति से विश्ववंदनीय परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू को चुना तथा उनके प्रति अपनी आत्मीयता एवं विश्वास व्यक्त किया। पूज्य बापूजी की सभा के अध्यक्ष के रूप में घोषणा होते ही पंडाल में उपस्थित लाखों जागरूक श्रोताओं ने जोरदार तालियों से अपनी हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की।

सभा में संतों ने भारतीय संस्कृति की रक्षा, धर्म-जागृति एवं देशहित से संबंधित महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर अपने विचार प्रकट किये।

कार्यक्रम के सूत्रसंचालक महामंडलेश्वर हंसदासजी महाराज, महामंत्री, संत समिति :

- संकल्प सभा

२७ व २८ जनवरी २००९ इन दो दिनों में हमारे 'धर्म रक्षा मंच' के समस्त भारत के संतों ने बैठकर गहन चिंतन और मनन किया है। ग्यारह सूत्रों पर यहाँ चर्चा की गयी और पूरे देश में 'धर्म रक्षा संकल्प यात्राएँ' हों ऐसा हमारे धर्माचार्यों ने संकल्प किया है। दिनांक २० फरवरी से २० मार्च तक देश के कोने-कोने में जाकर सात हजार से अधिक स्थानों पर 'धर्म रक्षा संकल्प यात्राएँ' होंगी।

महामंडलेश्वर स्वामी देवेन्द्रानंदजी ने सभा अध्यक्ष परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू व संतों-महात्माओं के स्वागत में कहा :

जो बदल देते रहे हैं नक्शा,
भारत के भविष्य की लकीरों का।
जो बदल देते रहे हैं नक्शा,
इन्सान की किस्मत की लकीरों का।
यह देश है संत आसारामजी
और धर्म रक्षा मंच के सभी संतों का, वीरों का॥
न राज है न सर पे ताज है,
फिर भी आप हम सबके सरताज हैं।
यूँ तो हैं और होंगे बहुत संत मगर,
भारत के कोहनूर आप हैं॥

साध्वी ऋतम्भराजी : 'धर्म रक्षा मंच' की इस पावन संकल्प सभा के अध्यक्ष प्रातःस्मरणीय-सायं वंदनीय, सारे राष्ट्र ही नहीं अपितु सारे विश्व में भक्ति की गंगा को प्रवाहित करनेवाले पूज्य बापूजी को मैं वंदन करती हूँ। अखाड़ा परिषद के प्रमुख पूज्य स्वामी ज्ञानदासजी महाराज एवं अपने पूज्य गुरुदेव युगपुरुष स्वामी परमानंदजी महाराज के चरणों

में वंदन करती हूँ।...

प्रसाद बाँटनेवाले संत, नेह, करुणा, प्रेम लुटानेवाले संत आज यहाँ एकत्रित हुए हैं, कुछ कारण है। निश्चित रूप से गंभीर कारण है कि जब अंग गल जाता है तो उसकी शल्य-चिकित्सा करनी पड़ती है। जब राष्ट्र की चेतना सुप्त हो जाती है तो उसको झकझोरके जगाना पड़ता है। जब चक्रवर्ती सम्राट अपने राजभवनों में विलासिता की दुनिया में खो जाते हैं तो विश्वामित्र बनके राम और लक्ष्मण की जवानी माँगनी पड़ती है। उसी भूमि के पूज्य संत आज हमारे सामने हैं।

बात धर्मान्तरण की चल रही है। सेवा के नाम पर सौदा हो रहा है। मेरा कितना बड़ा समाज है जो उपेक्षा को झेलता है। मेरे देश के कितने लोग हैं जो दवा की एक गोली के लिए, एक वस्त्र के लिए तरसते रहते हैं। इसलिए निश्चय करो हिन्दुओ ! एक सक्षम हिन्दू एक अक्षम हिन्दू की चिंता करेगा तो मिशनरियों के बोरी-बिस्तर गोल हो जायेंगे क्योंकि उनकी आधारभूमि गरीबी है, दरिद्रता है जिसका वे छल-कपट से लाभ उठाते हैं। मैं आपसे इतना ही निवेदन करना चाहती हूँ कि

लोकसभा वासंती चोला
पहनके जिस दिन आयेगी।
गली-गली मेरे भारत की
वृंदावन बन जायेगी॥

यहाँ हाथों में मक्खन के लौंदे उछालते हुए बालक चाहिए, दूध-दही की नदियाँ चाहिए, शराब की बोतलों में सुख ढूँढ़नेवाला समाज नहीं चाहिए। देश का यह जो बहुत ही संवेदनशील समय है, इसमें आपकी और मेरी भूमिका निश्चित होनी चाहिए। मेरा आपसे अनुरोध है कि कहीं आपको शर्मिंदा न होना पड़े...

देखो वीर जवानो ! अपने -
खून पे ये इल्जाम न आये।
माँ न कहे कि मेरे बेटे,
वक्त पड़ा तो काम न आये॥

चंद लोग हमारी व्यवस्था, संप्रभुता, भाईचारा, लोकतंत्र सबका मजाक उड़ायें, यह अच्छा नहीं लगता। क्यों हो रहा है ? क्योंकि वंदनीयों का वंदन नहीं हुआ। पूज्य बापूजी जैसे संत, जिन्होंने सारे विश्व के अंदर भावधारा को प्रबल किया, उनकी बात को, उनके यहाँ की छोटी-सी घटना को लेकर, साध्वी प्रज्ञा के विषय को लेकर पूरे समय 'भगवा ब्रिगेड, हिन्दू तालिबान और हिन्दू आतंकवाद' इस तरह का देश के अंदर अनर्गल प्रचार हो रहा है। यह तो वैसा ही हुआ कि उन्होंने हमारी शांत अवस्था, करुणा को हमारी कायरता समझ लिया है। अतः अब समय आया है अपने-आपका, अपने स्वरूप का दर्शन कराने का। इस देश में वातावरण बनाओ हिन्दुओ ! कि वंदनीयों का वंदन होना चाहिए और दंडनीयों को दंड मिलना चाहिए। भारत को सरदार पटेल या सुभाषचन्द्र बोस जैसा नेतृत्व चाहिए। तुम वातावरण का निर्माण करोगे।

हमको तय करना है कि यहाँ सत्ता की नीति विधर्मी होने न पाये, तुष्टीकरण की हवा इस राष्ट्र में चलने न पाये, मानवों का रक्त न बहे, अस्थियों का ढेर न लगे, राज्यसत्ता कमजोर लोगों के हाथों में न रहे।

'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश पुस्तक की मैं बहुत प्रशंसा करता हूँ'

- श्री हंसदासजी महाराज

संकल्प सभा के इस पावन अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय रामसनेही सम्प्रदाय के आचार्य रामदयालदासजी महाराज, विहिप महामंत्री श्री

प्रवीणभाई तोगड़ियाजी एवं पूज्य बापूजी के करकमलों से 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक व फरवरी मास की 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका का विमोचन हुआ ।

अखिल भारतीय साधु समाज के सचिव एवं संत समिति के महामंत्री श्री हंसदासजी महाराज ने इस पुस्तक की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा : 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश - युवाधन सुरक्षा' पुस्तक की एक करोड़ साठ लाख प्रतियाँ छप चुकी हैं । मैं इस पुस्तक की बहुत प्रशंसा करता हूँ । बहुत अच्छा काम किया है युवाओं के लिए । इस देश का नौजवान जागेगा तो इस देश की शक्ति जागेगी । इस देश के अंदर जब युवाशक्ति जागेगी तो निश्चित रूप से इस देश के अंदर परिवर्तन होगा, इस धर्म की रक्षा होगी, इस राष्ट्र की रक्षा होगी । जब-जब इस देश का नौजवान जागा है, तब-तब धर्म निखरकर आगे आया है । इसलिए इस पुस्तक से मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है ।

जगद्‌गुरु आचार्य श्री रामदयालदासजी महाराज, अंतर्राष्ट्रीय रामसनेही सम्प्रदाय : पवित्र राष्ट्र भारत में, महाराष्ट्र की दिव्य धरती पर, मुम्बा देवी की शक्ति धरा पर आयोजित 'धर्म रक्षा मंच' की इस ऐतिहासिक संकल्प सभा के अध्यक्ष, समाज में, हिन्दू संस्कृति और युवा संस्कृति में अध्यात्म संस्कृति के आशातीत प्राण फूँकनेवाले महाभाग पूज्य आसारामजी बापू, अखाड़ा परिषद अध्यक्ष महाभाग, आचार्य परिषद अध्यक्ष महाभाग, विश्व हिन्दू परिषद, धर्माचार्यवृंद !...

भारत के मासूम, भोले-भाले, सरल लोगों को, मातृशक्तियों को अपने शब्दों के चक्रव्यूह में फँसाकर चारों तरफ धर्मान्तरण का विषपान कराया जा रहा है । आतंकवादी तो एक बार हमला करके अपना काम कर लेते हैं पर यह रोज हमला हो रहा है, इसे कौन सँभालेगा ? कहाँ जा रही है हमारी युवा पीढ़ी ?

'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक का विमोचन हुआ । ये पूज्य बापूजी के विचार हैं कि अच्छे साहित्य से युवाओं में अच्छे संस्कार आयेंगे ।

जैन मुनि विमलसागरजी : मैं जैन धर्म का मुनि हूँ लेकिन भारतीय संस्कृति का अंग हूँ । समन्वय की यह धारा आगे बढ़नी चाहिए । अपनी शुचिता, अपनी मजबूती, अपने मौलिक संस्कार, अपनी शिक्षाएँ जिन्दी रहनी चाहिए । ऐसे प्रयत्न मात्र संतों को ही नहीं, हर इन्सान को करने होंगे । अगर आप सो गये तो लुट गये ।

हमारी शिक्षा-संस्थाओं से अब जो लोग पैदा होते हैं वे अधिकांश ईसाई (मानसवाले) पैदा होते हैं । मैं युवावर्ग को देखता हूँ तो महसूस करता हूँ कि उनमें धर्म के प्रति इतनी श्रद्धा और निष्ठा है ही नहीं । इसलिए सबसे पहले युवावर्ग को जगाना अपना संकल्प होना चाहिए ।

महंत श्री ज्ञानदासजी महाराज, अध्यक्ष, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद, मुख्य संयोजक, धर्म रक्षा मंच : हमारे पास इस समय दो विपदाएँ हैं - बाह्य आतंकवाद व आंतर आतंकवाद । बाह्य आतंकवादी तो सामने से आप पर गोली बरसा रहे हैं लेकिन अंदर से जो हो रहा है वह उससे कम-से-कम एक लाख गुना हो रहा है - ईसाई लोग हिन्दुओं का धर्मान्तरण कर रहे हैं । आप लोग संकल्प लीजिये कि इस देश से धर्मान्तरण को, आतंकवाद को उखाड़ फेंकेंगे ।

महंत हरिगिरिजी महाराज, महामंत्री, अखाड़ा परिषद : मीडिया भाषा को तोड़-मरोड़कर न पेश करते हुए शुद्ध और सात्त्विक रूप से कार्य करे । आज इसमें कुछ लोग ऐसे नजर आते हैं जो बहुत स्वार्थी हैं । समय-समय पर हमें यह देखने में आया कि मीडिया द्वारा सत्य न बताकर सिर्फ

लोगों को गुमराह करने का प्रयास किया गया। मीडिया को विदेशी ताकतों का हथकंडा न बनकर निष्पक्ष रहना चाहिए।

डॉ. श्री रामविलास वेदांतीजी महाराज, अयोध्या : भारतीय संस्कृति साधना के प्रतीक, सद्धर्म-संरक्षण विचक्षण वरेण्य सभाध्यक्ष परम सम्माननीय श्री आसाराम बापूजी, रामजन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष परम सम्माननीय महंत श्री नृत्यगोपालदासजी महाराज एवं सभी पूज्य धर्माचार्य !

आज मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि जो राम का अपमान करें, जो राष्ट्र का अपमान करें, जो हिन्दुओं का अपमान करें उनको हिन्दुस्तान में रहने का अधिकार नहीं होना चाहिए। जब देश का हिन्दू जातीय भावनाओं से ऊपर उठकर एक साथ खड़ा होगा, तब दुनिया की कोई ताकत भारत को पराजित नहीं कर सकती है।

स्वामी चिदानंद सरस्वतीजी महाराज, परमाध्यक्ष, परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश : समय आ गया है कि भारत की जनता अपने वोटबल की शक्ति से 'सेक्युलर' स्टेट नहीं बल्कि 'स्पिरिचुअल' स्टेट बनाये, स्पिरिचुअल सरकार बनाये; आध्यात्मिक भारत बने।

श्री प्रवीणभाई तोगड़िया, अंतर्राष्ट्रीय महामंत्री, विहिप : हिन्दू आतंकवादी नहीं हो सकता पर रावण जैसे आतंकवादियों का संहार करनेवाला नर-नायक राम इस धरती पर पैदा हुआ करता है। हिन्दू औरंगजेब नहीं हो सकता पर औरंगजेब को दफन करनेवाले छत्रपति शिवाजी महाराज भी जीजाबाई की कोख से पैदा होते हैं। हम अपने धर्म की रक्षा करेंगे।

श्री नृत्यगोपालदासजी महाराज, अध्यक्ष, रामजन्मभूमि न्यास : संघे शक्तिः कलियुगे। हम संकल्प करते हैं कि सभी भारतवासी एक हों, एकता का परिचय दें। राष्ट्र की, धर्म की रक्षा के लिए अग्रसर हों। **धर्मो रक्षति रक्षितः।** यदि हम धर्म की रक्षा करते हैं तो हमारी रक्षा होती है। यहाँ पर हम सभी लोगों की यही कामना है कि एक बार पुनः रामराज्य हो, हिन्दू राष्ट्र हो।

डॉ. श्री रामकमलदासजी वेदांती, काशी : यह देश अनादिकाल से अध्यात्म-प्रधान रहा है और अब भी अध्यात्म-प्रधान है, आगे भी अध्यात्म-प्रधान रहेगा। किन्हीं समझदार महापुरुष ने कहा है कि 'धर्मविहीन राजनीति विधवा है।' इसलिए इस राष्ट्र में अगर राजनीति चल सकती है तो धर्मयुक्त होकर ही चल सकती है।

स्वामी श्री परमात्मानंदजी महाराज, महामंत्री, आचार्य सभा : हमारे पास अमेरिका के होम डिपार्टमेंट का रिकार्ड है कि पूरे विश्व में आतंकवाद से सबसे ज्यादा जानें, मैन आवर्स व सम्पत्ति गँवानेवाला देश भारत है। और यही हमारी करुणता है कि हमारे राजकीय नेतृत्व ने इतनी पीड़ा के बावजूद भी आतंकवाद के खिलाफ कड़क-से-कड़क कायदे नहीं बनाये हैं। हमारे राजकीय नेतृत्व में संकल्पशक्ति ही नहीं है कि वह आतंकवाद का सामना करे।

महामंडलेश्वर युगपुरुष स्वामी परमानंदजी महाराज (साध्वी ऋतम्भराजी के गुरुदेव) : नौवें गुरु तेगबहादुरजी अध्यात्म की शिक्षा, ध्यान, समाधि, भक्ति की बातें सिखाते रहे और उनको शहीद होना पड़ा। तब उनके बेटे गुरु गोविंदसिंहजी महाराज को खालसा सजाना पड़ा। धर्म एक काम करता है, अध्यात्म एक काम करता है - जीवन को बहुत ऊँचाइयों तक ले जाता है पर जो ऐसे लोगों को भी मारने से नहीं कतराते, उनके लिए गुरु गोविंदसिंहजी की जरूरत पड़ती है और राम की जरूरत पड़ती है। युधिष्ठिर धर्मात्मा हैं, झूठ नहीं बोलना चाहते और आतताई उन पर हावी हो जाते हैं, तब भगवान श्रीकृष्ण को युधिष्ठिर से झूठ बुलवाना पड़ता है, सूर्य ढाँकना पड़ता

है। अर्थात् जब कुछ लोग गलत होते हैं तो उनको राह पर लाने के लिए कुछ-न-कुछ करना पड़ता है। आपसे भी हमारा निवेदन है, हम गलत नहीं हैं पर इन आततायियों से निपटने के लिए हम नियम-कानून का पालन करते रहें, कोर्ट में केस चलाते रहें और ये चाहे जैसे हमको मारते रहें, यह उचित नहीं। धर्म, धर्म की रक्षा के लिए है, अधार्मिकों के लिए धर्म नहीं है। उनसे तो निपटने की तैयारी चाहिए।

स्वामी चिन्मयानंदजी महाराज, परमाध्यक्ष, परमार्थ आश्रम, हरिद्वार एवं पूर्व गृहराज्य मंत्री : मैं आप सबका एवं जितनी धार्मिक संस्थाएँ, धार्मिक मंच, धार्मिक सोच के लोग हैं उनका आवाहन करता हूँ कि अब हमें स्वाभिमानी संविधान चाहिए, आध्यात्मिक संविधान चाहिए, हमें 'सेक्युलर' संविधान नहीं चाहिए। इसलिए मैं आपके माध्यम से इस देश की संसद से कहना चाहता हूँ कि जहाँ 'सेक्युलर' शब्द है उसको हटा दो, वहाँ 'स्पिरिचुअल' लाकर भारत को 'आध्यात्मिक राष्ट्र' घोषित करो। जिस दिन यह होगा, उस दिन भारत अजेय होगा, संप्रभु होगा, स्वायत्त होगा और इसका रास्ता कोई रोक नहीं सकता।

महंत श्री रामेश्वरदासजी महाराज, ऋषिकेश : भगवान राम ने जिस श्रीरामसेतु एवं रामेश्वरम् की स्थापना करके वैष्णव, शैव, शाक्त सबका समन्वय किया, उस रामसेतु को एवं भगवान राम के अस्तित्व को ही नकारा जा रहा है। लेकिन मद में चूर होकर कोई भगवान का भजन करनेवालों को असमर्थ न मान ले।

स्वामी कृष्णमणिजी महाराज, कृष्णप्रणामी सम्प्रदाय : आज से १५०० वर्ष पूर्व इस दुनिया में कोई मुसलमान नहीं था और आज से २१०० वर्ष पूर्व इस दुनिया में कोई ईसाई नहीं था। तो हजारों वर्ष पूर्व कौन थे ? सब सनातन धर्म के अनुयायी थे, हिन्दू थे। और जो बीच में परिवर्तित हुए वे कभी वापस भी आ जायेंगे। लेकिन यह संस्कृति, सनातन धर्म कभी परिवर्तित नहीं हुआ, यह वर्षों से चल रहा है और चलेगा। 'धर्म रक्षा मंच' के माध्यम से हम यह संकल्प लें कि 'हम सभी संगठित होंगे, एक होंगे, एक रहेंगे।' उसके बाद सारे कार्य अपने-आप सिद्ध हो जायेंगे।

स्वामी गंगाधरेन्द्र सरस्वतीजी, जगद्गुरु शंकराचार्य, स्वर्णमल्ली मठ, कर्नाटक : भारत देश में हमारे साथ बहुत मुसलिम बंधु रहते हैं। ये सब बहुत दिन पहले या कुछ दिन पहले हिन्दू थे। मतांतरित होकर, धर्मान्तरित होकर या और किसी कारण से मुसलिम बन गये हैं। इसलिए हम चाहते हैं कि ये सब मातृधर्म में वापस आयें, हमारा दरवाजा खुला है। यदि वापस नहीं आ सकें तो 'एकरूप नागरिक कानून' को स्वीकार करें।

महामंडलेश्वर हंसदासजी महाराज : धर्मान्तरण देश के अंदर एक बहुत बड़ी समस्या है। जहाँ मुसलिम आतंकवाद फैला रहा है वहीं ईसाई हिन्दुओं को धर्मान्तरित करने की कोशिश कर रहा है।

अरे ! जिस भगवान को सूली पर लटका दिया जाता है वह तुम्हारी रक्षा क्या करेगा ! यहाँ तो कृष्ण पैदा होते हैं तो कंस को मारने के लिए आते हैं, राम आते हैं तो रावण को मारने के लिए आते हैं। जितने भी हमारे अवतार होते हैं, दुष्टों का नाश करने के लिए होते हैं।

इस प्रकार विभिन्न संतों ने अपनी ओज-तेजपूर्ण वाणी में श्रोताओं का मार्गदर्शन कर उनमें धर्म-रक्षा की भावना का संचार किया।

अध्यक्षीय वक्तव्य

'धर्म रक्षा मंच - संकल्प सभा' के अध्यक्ष विश्ववंदनीय परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू : अखाड़ा परिषद के परम अध्यक्ष श्री

ज्ञानदास महाराजजी, साधुवेश न होते हुए भी साधुताई की सच्ची सेवा करनेवाले श्री अशोक सिंघलजी, हनुमानस्वरूप श्री तोगड़ियाजी, हमारे हंसदासजी महाराज और अखाड़ा परिषद आदि संगठनों के अनेक महानुभाव और अनेक महाराज, जो दूरद्रष्टा हैं, ऋषि-परम्परा की पीड़ा से द्रवित होकर इस नगरी में आये हैं।

महात्मा बुद्ध ने शिष्यों से पूछा : ''सबसे ज्यादा ठोस क्या चीज है ?''

एक शिष्य ने कहा : ''पत्थर।'' दूसरे ने कहा : ''नहीं, लोहा।'' तीसरे ने और कुछ कहा।

महात्मा बुद्ध ने कहा : ''नहीं, गलती न करो। सबसे ठौस, शक्तिशाली है 'संकल्प', जो पत्थरों को चूर कर दे, लोहे को पिघला दे और परिस्थितियों को बदल दे।''

इस संकल्प सभा में बाह्य आतंक और भीतरी आतंक तथा हमारी आपस में थोड़ी भोलेपन की आदत को हटाकर सजाग करने के लिए संत-महापुरुष पधारे हैं। मुझे अध्यक्ष पद देकर इन्होंने अपनी ही सज्जनता का दर्शन कराया है। हम तो संतन के दास... संतों को तो प्रणाम और संतों के प्यारों को भी प्रणाम !

भारत के कुछ लोग पीड़ाग्रस्त हैं, हम उनका ध्यान रखें। देखिये, मंदिर तो बनने चाहिए लेकिन गरीबों के इलाकों में जरा झाँकते हैं न, तो उनकी दुरावस्था देखकर हृदय द्रवित होता है। उनके लिए कुछ झोंपड़े भी बनने चाहिए, मकान भी बनने चाहिए, उनका स्वास्थ्य भी बनना चाहिए, उनके लिए आरोग्य केन्द्र भी बनने चाहिए, उन्हें कपड़े भी मिलने चाहिए और दिवाली के दिनों में मैं सत्संगों में कहता आया हूँ कि आप अपने घर में दिवाली मनाते हैं ठीक है लेकिन पड़ोस के गरीब-गुरबों के यहाँ जाकर उनके बच्चों को कपड़े पहनाइये और उन्हें भी मिठाई दीजिये, पटाखे दीजिये और स्नेह कीजिये।

उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति, पराक्रम- ये छः चीजें जिस समाज में, जिस व्यक्ति में आयीं, उसने परिस्थितियों पर अपना साम्राज्य स्थापित किया। मैं सुनाया करता हूँ कि कुमारगुप्त का १४ वर्षीय बेटा था उपगुप्त। कुछ लोग हूण प्रदेश से आते थे और बिहार के मगध राज्य में आतंक मचाते थे। वह १४ वर्ष का किशोर कहता है : ''पिताजी ! मुझे आज्ञा दीजिये।''

पिता ने कहा : ''बेटा ! तू बच्चा है, अक्ल का कच्चा है।''

''पिताश्री ! उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम जिसके पास हैं वह परिस्थितियों के सिर पर पैर रखकर अपना मकसद हासिल करता है।''

बेटे का उत्साह देखकर बाप ने फौजी दिये और उपगुप्त डंका बजाता-बजाता निकल पड़ा। जहाँ रात्रि होती वहाँ अपने सैनिकों में प्राणबल भरता, संकल्प भरता। पंजाब को लाँघते हुए पहाड़ी इलाकों में जहाँ हूण प्रदेश था वहाँ जाकर धावा बोल दिया और मगध नरेश का झंडा फहराया १४ वर्ष के बालक ने ! तो तुम तो बड़े हो, समझदार हो, तुम भी संकल्प करो। छत्रपति शिवाजी की यह कर्मभूमि है। संकल्प करो कि हमारा लक्ष्य भारतीय संस्कृति की ऊँचाइयों को छूना है।

लक्ष्य न ओझल होने पाये,
कदम मिलाकर चल।
सफलता तेरे चरण चूमेगी,
आज नहीं तो कल॥

इस 'धर्म रक्षा मंच' ने जो लक्ष्य बनाया है, इसके जो सिद्धांत हैं, बहुत सुंदर-सुहावने हैं। किसी एक सम्प्रदाय का या किसी एक धर्म का नहीं, बल्कि प्राणिमात्र के मंगल का इरादा लेकर

यह चल रहा है । इसमें 'अपनेवाले' और 'परायेवाले' ऐसा भी नहीं है ।

'पार्लमेंट ऑफ वर्ल्ड रिलीजियन्स' में मेरे वक्तव्य के बाद वहाँ के मीडिया के लोगों ने मुझे घेर लिया और प्रश्न पूछे । कहा : ''मि. आसारामजी ! गॉड जीसस इज ग्रेट गॉड, लॉर्ड रामा इज नथिंग । अपनी औरत के लिए रो रहा है । लॉर्ड क्रिश्ना इज नथिंग । ग्रेट गॉड इज जीसस क्राइस्ट ।...''

मैंने कहा : लिसन मी । अब मेरे को सुनो । सोते हुए शेर की आँख में तुमने उँगली भोंकी है। जो प्रकट होते ही यमुनाजी को चरणस्पर्श करा देता है और यमुनाजी शांत अवस्था में आ जाती हैं, छठे दिन पूतना आती है उसका जहर पीता है फिर भी उसे अमर पद दे देता है, खुद भी अमर और पूतना को भी अपने धाम में भेज देता है, जिसने विषाद में गिरे हुए लोगों को बंसी बजाकर मधुरता दी और सत्रह साल की उम्र तक जिसने हथियार नहीं उठाया फिर भी आतंकी तत्त्वों को ठिकाने लगा दिया, ऐसा भगवान कृष्ण बड़ा कि कीलें खाते हुए पाँटियस पायलेट की हाजिरी में बेचारा प्राण छोड़ गया वह तुम्हारा गॉड बड़ा, यू जज (तुम निर्णय करो) ।

राम, लखन और सीता - तीन थे और महाराज ! शूर्पणखा आयी और क्या-क्या किया, फिर रावण का सैन्य लगा । अंत में रावण मरते-मरते कहता है : 'श्रीरामचन्द्रजी के चरणों में मेरा प्रणाम है ।' मैंने कहा कम-से-कम राक्षस रावण जैसी बुद्धि तो तुम्हारी होनी चाहिए कि रामजी की महिमा थोड़ी तो समझो ! लॉर्ड रामा इज नथिंग ?

अरे, श्रीरामचन्द्रजी का तो नाम इतना प्रभाव रखता है कि... कुंभकर्ण ने रावण से कहा कि ''तुम सीताजी के आगे राम बनके जाते तो सीताजी तुम्हें पति मानकर छूतीं और रामजी का बल कम हो जाता ।'' तब रावण बोलता है : ''ये पापड़ मैंने बेले हैं । मैं ज्यों रामजी का चिंतन करता हूँ त्यों तेरी भाभी भी मुझको बहन जैसी लगती है ।''

जिन राम का नाम लेते समय रावण का काम राम में बदल जाता है, ऐसे राम के प्यारों की भूमि में धर्मान्तरण हो और धोखेबाजी से हो, कुछ सामान के बहाने हो, बच्चों की पढ़ाई के बहाने हो अथवा वर्ग-विग्रह और संतों को बदनाम करने की साजिशें हों... तो मैंने तो घोषणा की थी कि साध्वी प्रज्ञाजी को अगर अब ज्यादा सताया गया तो जैसे जयेन्द्र सरस्वती महाराजजी को सताया गया और मैंने सड़क पर बैठकर सत्याग्रह किया था वैसे मैं पुनः सत्याग्रह करूँगा । तब मैंने कहा था : 'जिन्होंने जयेन्द्र सरस्वतीजी को सताया उनको प्रकृति देखेगी' और महाराजजी बाहर आये और जिन्होंने सताया उनकी क्या स्थिति है गहराई से देखो तो आपको आश्चर्य होगा ।

कुछ लोग बोलते हैं : 'अन्याय हो रहा है ।' भगवान के यहाँ सब न्याय होता है । सदियों से सृष्टि चली आ रही है, अगर अन्याय होता तो सृष्टि चलती नहीं । इन संतों को प्रेरणा किसने दी ? बताओ, कौन है प्रेरक ? अशोकजी के हृदय में कौन है प्रेरक ? इस संत-समाज के हृदय का प्रेरक कौन है ? वेदव्यासजी जैसे महापुरुषों की परम्परा में जो चले आ रहे हैं महापुरुष, उनके हृदय को कौन जागृत करता है ?

समय आया है । यह 'धर्म रक्षा मंच' गाँव-गाँव जायेगा । महीने तक तो जायेगा लेकिन बाद में भी इनके प्यारे अपने-अपने इलाके में अपना-अपना दैवी शंखनाद करते रहेंगे । आप अपने-अपने पड़ोस के बच्चों को इकट्ठा करके 'बाल-संस्कार केन्द्र' चलाओ । बच्चों को वीरों की

कथाएँ और ॐकार का जप, भगवद्ध्यान व भगवन्नाम की महिमा सुनाओ। राम के 'र'कार से सूर्य तत्त्व जागृत होता है और 'म'कार से चंद्र तत्त्व जागृत होता है, कई बीमारियाँ दूर होती हैं और आपके जीवन में आत्मिक शक्तियों का विकास होता है।

इन महापुरुषों ने जो श्रम उठाया है, आये हैं और आप भी आये हैं, इसका बदला आपको कौन देगा पता है ? श्रीकृष्ण कहते हैं : **कृपणाः फलहेतवः।** जो खुद शाश्वत है और नश्वर फल चाहता है वह कृपण है। आप नश्वर फल की इच्छा न करो। शाश्वत परमात्मा के तत्त्व को जगाने के लिए आप भी सजाग रहो, औरों को सजाग करो और बच्चों को कहो कि अपनी भौंहों के बीच (तीसरे नेत्र पर) ॐकार का ध्यान करें, जिससे सत्तर हजार बोविस ऊर्जा बनती है यह फ्रांस और जापान के वैज्ञानिकों ने रिकार्ड किया है। महिलाएँ पायल पहनें और जो लोग पायल का विरोध करते हैं और स्कूलों में बच्चियों के साथ मार-पीट करते हैं, ऐसे स्कूलों में, धर्मान्तरण करानेवालों के स्कूलों में बच्चों को न भेजो। आपस में इकट्ठे होकर अपने-अपने स्कूल और कॉलेज खोलो और मीडिया में भी आगे आओ। मीडिया के जो साथी-सज्जन दूर तक सत्य की खबरें पहुँचाते हैं, उनके माता-पिता को और आपके माता-पिता को मैं भगवान शिवजी की तरफ से धन्यवाद देता हूँ :

धन्या माता पिता धन्यो
गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः।
धन्या च वसुधा देवि
यत्र स्याद् गुरुभक्तता ॥

हे पार्वती ! उनकी माता धन्य है, उनके पिता धन्य हैं, उनका कुल और गोत्र धन्य है, **कुलोद्भवः** अर्थात् जो उनके कुल में उत्पन्न होंगे वे भी धन्य हैं क्योंकि संतों का दर्शन, संतों के वचन और भगवन्नाम के उच्चारण का लाभ उन्हें मिलता है।

'पार्लमेंट ऑफ वर्ल्ड रिलीजियन्स' में मुझसे कई सवाल पूछे गये। उन दिनों में मुंबई में मेमन बंधुओं ने बम ब्लास्टिंग करवाया था। मैंने कहा : हमारे ही देश का अन्न खाकर, हमारे ही देश का जल पीकर पड़ोसवाले इधर करते हैं लेकिन सच्चा भारतीय जो गीता, रामायण, भागवत या गुरुग्रंथ साहिब को मानता है, हरि ॐ या राम-राम करता है, ऐसा हिन्दुस्तानी दुनिया के कई देशों में है, साबित करके दिखाओ किसीने ऐसा किया हो तो उसकी जिम्मेदारी मैं उठाता हूँ। हिन्दू आतंकी नहीं होता है लेकिन हिन्दू को परेशान करोगे तो फिर हिन्दू जानता है :

जो तोको काँटा बुवे,
वाको बो तू भाला।
वो भी क्या याद करेगा,
पड़ा था किसीसे पाला ॥

हरि ॐ... ॐ... ॐ... ॐ... ॐ...
शक्ति, भक्ति और मुक्ति...

इस सभा के सभी संतवृंद, महापुरुष, मंडलेश्वर, अखाड़ा परिषद के सारे महानुभावों को और आप सभीको खूब-खूब स्नेह, खूब-खूब धन्यवाद, प्रणाम, नमस्कार।

हमारा किसीसे द्वेष नहीं है, हमारा कोई शत्रु नहीं है लेकिन हमें कोई सताता है तो हमें सावधान रहने का कर्तव्य सिखाते हैं वेद-शास्त्र। हमारे में घृणा नहीं है लेकिन आत्मरक्षा तो हमारा कर्तव्य है। गरीबों के प्रति उदारता बरतें और आपस में

निंदा किसीकी हम किसीसे
भूलकर भी ना करें।
ईर्ष्या कभी भी हम किसीसे
भूलकर भी ना करें।

बहू-सासु, देवरानी-जेठानी, हिन्दू-हिन्दू आपस में टकराओ नहीं।

दुनिया में अगर मंगल चाहते हो तो ऐसी संस्कृति की जरूरत है जो निराकार भगवान को साकार करके पैदा कर दे और वह संस्कृति केवल भारत में है, विश्व में और कहीं भी नहीं मिलेगी। निर्गुण-निराकार भगवान या तो पैगम्बर भेजेगा या तो बेटा भेजेगा लेकिन यह भारतीय संस्कृति ही एक ऐसी है कि भगवान को बेटा बना सकती है, सखा बना सकती है, शिष्य भी बना सकती है, अरे ! चेले का चेला बना सकती है।

सांदीपनि को गुरु ने कहा : ''बेटा ! तू पढ़ने में भले थोड़ा ढीला है लेकिन गुरु-शिष्य परम्परा का निर्वाह तू अच्छी तरह से करता है। मैं तुझे वरदान देता हूँ कि प्रेमावतार भगवान कृष्ण तेरा चेला बनेगा।''

तो भगवान को चेले का चेला बनाने का सामर्थ्य देनेवाली यह भारतीय संस्कृति है। संकल्प करो कि हमारा लक्ष्य भारतीय संस्कृति की रक्षा करना है, इसकी ऊँचाइयों को छूना है।

नारायण... नारायण... नारायण... नारायण...

***

जिन संतों-महानुभावों ने संकल्प सभा में एवं इसके पूर्व हुई परिचर्चा में अपनी अनमोल उपस्थिति दर्शायी, उनके नाम इस प्रकार हैं :

काँची कामकोटि पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी महाराज, जगद्गुरु शंकराचार्य रामानंदजी महाराज, जगद्गुरु शंकराचार्य माधवाचार्यजी महाराज, जगद्गुरु शंकराचार्य विश्वेश्वरानंदजी महाराज, जगद्गुरु शंकराचार्य रामानुजाचार्यजी महाराज, पंचायती महानिर्वाणी अखाड़ा के महंत रविन्द्रपुरीजी महाराज, अटल अखाड़ा के सचिव मंडलेश्वर महंत हरिचैतन्यपुरीजी महाराज, आह्वान अखाड़ा के सचिव महंत शिवशंकर गिरिजी महाराज, पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी के महंत त्र्यंबक भारतीजी महाराज एवं महंत बिल्केश्वर गिरिजी महाराज, जूना अखाड़ा के महंत प्रेमगिरिजी महाराज, आनंद अखाड़ा के सागरानंदजी महाराज, जूना अखाड़ा के सभापति उमाशंकर भारतीजी महाराज, आनंद अखाड़ा के स्वामी शंकरानंदजी महाराज, उदासीन बड़ा अखाड़ा के महंत राजेन्द्रदासजी महाराज, पंच दिगम्बर अखाड़ा के हठयोगी बलरामदासजी महाराज, अग्नि अखाड़ा के महामंडलेश्वर मुरारी चेतनजी महाराज एवं महंत कैलासानंद ब्रह्मचारी, पंचायती अखाड़ा-कनखल के महंत श्री शिवानंदजी महाराज, जगद्गुरु रामानंदाचार्य रामधर आचार्यजी महाराज, अशरफी भवन-अयोध्या के जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीधराचार्यजी महाराज, महामंडलेश्वर बालकानंदजी महाराज (ब्रजघाट), महामंडलेश्वर स्वामी हरिॐपुरीजी महाराज (मथुरा), महंत विद्यानंदपुरीजी महाराज, जयंतीराम बापा (जामनगर), जगद्गुरु स्वामी राघवाचार्यजी महाराज (रेवासा-राजस्थान), वृंदावन के महंत फूलडोलबिहारीदासजी महाराज, नर्मदाखंडी आचार्य विनोदगिरिजी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी राघवानंदजी महाराज (दिल्ली), महंत दुर्गादासजी महाराज (हरिद्वार), पंजाबी बाबाजी महाराज (अयोध्या), महंत नवलकिशोरदासजी महाराज (दिल्ली), महामंडलेश्वर यतीन्द्रानंद गिरिजी महाराज (रूड़की), महंत नारायण गिरिजी महाराज (दिल्ली), महामंडलेश्वर स्वामी सोमेश्वरानंदजी महाराज, रामसनेही सम्प्रदाय के अमृतरामजी महाराज (जोधपुर), नाथ सम्प्रदाय के महंत सूरजनाथजी महाराज (हिमाचल प्रदेश), बौद्ध संत ज्ञानभंतेजी, महंत मनमोहनदासजी (राधे-

राधे बाबा), हरिॐदासजी महाराज (बाँसवाड़ा), माधवदासजी महाराज, संजयदासजी महाराज (अयोध्या), श्री हरिनारायण शास्त्रीजी (अयोध्या), परमसत्ता निकेतन-ऋषिकेश की साध्वी भाग्यवतीजी, स्वामी हरिपालजी महाराज (हरिद्वार), नागा बाबा श्यामानंद गिरिजी (मथुरा), भंडारी बाबाजी (मथुरा), शनि महाराज (सातारा), महंत योगी सूरजनाथजी, महामंडलेश्वर स्वामी बालकानंद गिरिजी महाराज, विश्वेश्वरानंद गिरिजी महाराज (मुंबई), स्वामी परमात्मानंदजी महाराज (मुंबई), हरिभक्त पंडित ज्ञानेश्वरजी माऊली, हरिभक्त दादाजी महाराज (मुंबई) ।

'विश्व हिन्दू परिषद' के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोकजी सिंघल, विहिप केन्द्रीय मंत्री व 'धर्म रक्षा मंच' के सहसंयोजक श्री राजेन्द्रसिंह पंकजजी, 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' के अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख श्री मधुभाई कुलकर्णीजी, विहिप के कार्याध्यक्ष श्री एस. वेदान्तम्जी, विहिप संगठन महामंत्री श्री दिनेशजी, विहिप संयुक्त महामंत्री (विदेश विभाग) श्री स्वामी विज्ञानानंदजी, विहिप उपाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश सिंघलजी, विहिप केन्द्रीय मंत्री श्री ओमप्रकाश गर्गजी, श्री सुब्रह्मण्यम् स्वामी । ❐

वी.सी.डी. भी उपलब्ध !

मुंबई में आयोजित इस 'धर्म रक्षा मंच - संकल्प सभा' की वी.सी.डी. आश्रम के सभी सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध है । सभी समितियाँ व सेवाधारी साधक इसे अपने-अपने क्षेत्र में अधिक-से-अधिक बाँटें व बँटवायें । केबल टीवी व चैनलों के माध्यम से इसका व्यापक प्रचार-प्रसार करें ।

हनुमानजी ने भी उठाया था गोवर्धन

(श्री हनुमान जयंती : ९ अप्रैल)

लंका पर चढ़ाई करने हेतु समुद्र पर सेतु का निर्माणकार्य पूरे वेग से चल रहा था । असंख्य वानर 'जय श्रीराम !' की गर्जना के साथ सेवा में जुटे थे । हनुमानजी उड़ान भर-भरके विशाल पर्वतों को श्रीरामसेतु के लिए जुटा रहे थे । दक्षिण के समस्त पर्वत सेतु में डाल दिये गये थे, इस कारण वे उत्तराखण्ड में हिमालय के समीप पहुँचे । उन्हें वहाँ द्रोणाचल का सात कोस (करीब १४ मील) का विस्तृत शिखर दिखा । पवनपुत्र ने उसे उठाना चाहा किंतु आश्चर्य ! सम्पूर्ण शक्ति लगाने पर भी वह टस-से-मस नहीं हुआ । हनुमानजी ध्यानस्थ हुए तो उन्हें उसका इतिहास पता चला । उन्होंने जान लिया कि भगवान श्रीरामजी के अवतार के समय जब देवगण उनकी मंगलमयी लीला का दर्शन करने एवं उसमें सहयोग देने हेतु पृथ्वी पर अवतरित हुए, उसी समय गोलोक से पृथ्वी पर आये हुए ये महान प्रभुभक्त गोवर्धन हैं ।

हनुमानजी ने महिमामय गोवर्धन के चरणों में अत्यंत आदरपूर्वक प्रणाम किया और विनयपूर्वक कहा : ''पावनतम गिरिराज ! मैं आपको प्रभुचरणों में पहुँचाना चाहता हूँ, फिर आप क्यों नहीं चलते ? वहाँ आप प्रभु की मंगल मूर्ति के दर्शन करेंगे और प्रभु आप पर अपने चरणकमल रखते हुए सागर

पार करके लंका में जायेंगे।''

गोवर्धन आनंदमग्न हुए, बोले : ''पवनकुमार ! दया करके मुझे शीघ्र प्रभु के पास ले चलें।''

अब तो हनुमानजी ने उन्हें अत्यंत सरलता से उठा लिया। हनुमानजी के बायें हाथ पर गोवर्धन फूल के समान हलके प्रतीत हो रहे थे।

उधर श्रीरामजी ने सोचा : 'गोवर्धन गोलोक के मेरे मुरलीमनोहर श्रीकृष्ण रूप के अनन्य भक्त हैं। यहाँ उन्होंने कहीं मुझसे उसी रूप में दर्शन देने का आग्रह किया तो मुझे मर्यादा का त्याग करना पड़ेगा। क्या किया जाय ?'

प्रभु सोच ही रहे थे कि उस पाँचवें दिन सौ योजन लम्बा और दस योजन चौड़ा सुविस्तृत दृढ़तम सेतु का निर्माणकार्य पूर्ण हो गया। फिर क्या था, तुरंत श्रीरामजी ने आज्ञा की : ''सेतु का निर्माणकार्य पूर्ण हो गया है, अतः अब पर्वत एवं वृक्षादि की आवश्यकता नहीं है। जिनके हाथ में जो पर्वत या वृक्ष जहाँ कहीं हों, वे उन्हें वहीं छोड़कर तुरंत मेरे समीप पहुँच जायें।''

वानरों ने दौड़ते हुए सर्वत्र श्रीरामजी की आज्ञा सुना दी। जिनके हाथ में जो पर्वत या वृक्ष थे, वे उन्हें वहीं छोड़कर प्रभु के समीप दौड़ चले। आज दक्षिण भारत में वीर वानरों के छोड़े हुए वे ही पर्वत विद्यमान हैं, वहाँ के पर्वत तो पहले सेतु के काम आ चुके थे। महामहिमामय गोवर्धन को अपने हाथ में लिये केसरीनंदन उस समय व्रजधरा तक पहुँचे ही थे कि उन्होंने प्रभु की आज्ञा सुनी। हनुमानजी ने गोवर्धन को तुरंत वहीं रख दिया किंतु उन्हें अपने वचन का ध्यान था। उसी समय उन्होंने देखा, गोवर्धन अत्यंत उदास होकर उनकी ओर आशाभरे नेत्रों से देख रहे हैं।

हनुमानजी बोले : ''आप चिंता मत कीजिये, मेरे भक्तप्राणधन स्वामी मेरे वचनों की रक्षा तो करेंगे ही।'' और वे प्रभु की ओर उड़ चले।

हनुमानजी श्रीरामजी के समीप पहुँचे। सर्वज्ञ रामजी ने समाचार पूछा तो उन्होंने कहा : ''प्रभो ! मैंने गोवर्धन को आपके दर्शन व चरणस्पर्श का वचन दे दिया था किंतु आपका आदेश प्राप्त होते ही मैंने उन्हें व्रजभूमि में रख दिया है। वे अत्यंत उदास हो गये हैं। मैंने उन्हें पुनः आश्वासन भी दे दिया है।''

भक्तवत्सल श्रीरामजी बोले : ''प्रिय हनुमान ! तुम्हारा वचन मेरा ही वचन है। गोवर्धन को मेरी प्राप्ति अवश्य होगी किंतु उन्हें मेरा मयूरमुकुटी वंशीविभूषित वेश प्रिय है। अतएव तुम उनसे कह दो कि जब मैं द्वापर में व्रजधरा पर उनके प्रिय मुरलीमनोहर रूप में अवतरित होऊँगा, तब उन्हें मेरे दर्शन तो होंगे ही, साथ ही मैं व्रज-बालकों सहित उनके फल-फूल एवं तृणादि समस्त वस्तुओं का उपभोग करते हुए उन पर क्रीड़ा भी करूँगा। इतना ही नहीं, अनवरत सात दिनों तक मैं उन्हें अपनी उँगली पर धारण भी किये रहूँगा।''

गोवर्धन के पास पहुँचकर हनुमानजी ने कहा : ''गिरिराज ! आप धन्य हैं ! भक्तपराधीन प्रभु ने आपकी कामनापूर्ति का वचन दे दिया है।'' और गोवर्धन को भगवान का वचन यथावत् सुनाया।

गिरिराज आनंदमग्न हो गये। नेत्रों में प्रेमाश्रुभरे उन्होंने अत्यंत विनम्रतापूर्वक श्रीरामभक्त हनुमानजी से कहा : ''आंजनेय ! आपके इस महान उपकार के बदले मैं आपको कुछ भी देने की स्थिति में नहीं हूँ। मैं आपका सदा कृतज्ञ रहूँगा।'' ❒

अक्ल लड़ाइये, बुद्धि बढ़ाइये

निम्नलिखित पहेलियों के उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे। तब तक अक्ल लड़ाइये, बुद्धि बढ़ाइये...

१. सारी कमरी जल गयी, जला न कोई धागा।
घर के लोग सब पकड़े गये,
घर खिड़की खिड़की भागा ॥

२. किस चिड़िया के सिर पर पैर ?

प्रकृति की अनमोल देन : सूर्यकिरण-चिकित्सा

मानव-शरीर प्रकृति की सर्वोत्कृष्ट रचना है व इसे स्वस्थ रखने की सम्पूर्ण व्यवस्था प्रकृति में है। इस प्राकृतिक व्यवस्था का आधारस्तंभ है - सूर्य। सूर्य की किरणों में सर्वरोगनाशक, बल व आरोग्यदायक शक्ति है।

आभारिषं विश्वभेषजीमस्यादृष्टान् नि शमयत्।

'सूर्यकिरणें सर्वरोगनाशक हैं। वे रोगकृमियों को नष्ट करें।' **(अथर्ववेद : ६.५२.३)**

अन्न, जल, वायु, भूमि, वनस्पति, औषधि तथा प्राणियों के तन-मन को विशुद्ध एवं पुष्ट करने का कार्य सूर्यकिरणों द्वारा निरंतर होता आ रहा है। भारतीय संस्कृति में भगवान सूर्य की पूजा-अर्चना, अर्घ्यदान, सूर्यनमस्कार आदि का जो विधान है उसका उद्देश्य सूर्योपासना के द्वारा शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति व आध्यात्मिक उन्नति है। आयुर्वेद के श्रेष्ठ आचार्य महर्षि चरकाचार्यजी ने भी दैवी चिकित्सा के अंतर्गत सूर्योपासना को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। पाश्चात्य संशोधक डॉ. सोले ने कहा है : 'सूर्य में जितनी रोगनाशक शक्ति है उतनी विश्व के अन्य किसी पदार्थ में नहीं है।' पशु सूर्यकिरणों में बैठकर अपनी बीमारी जल्दी ठीक कर लेते हैं, जबकि मनुष्य कृत्रिम दवाओं की गुलामी करके अपने स्वास्थ्य और धन का बिगाड़ करता है। अगर वह चाहे तो सूर्यकिरण-चिकित्सा के माध्यम से शीघ्र ही आरोग्य-लाभ प्राप्त कर सकता है।

सूर्यकिरणों में स्थित सप्तरंग शरीरस्थ रस-रक्तादि सप्तधातुओं को प्रभावित करते हैं। अन्न से आहार-रस का निर्माण करनेवाली जठराग्नि के अतिरिक्त इन सप्तधातुओं की पृथक्-पृथक् धात्वग्नियाँ होती हैं, जो धातुओं का निर्माण करती हैं, जैसे - रसाग्नि, रक्ताग्नि, मांसाग्नि आदि।

सूर्यकिरणों के सप्तरंग व्यापकरूप से ४ कार्य करते हैं :

१. जठराग्नि को प्रदीप्त करना।

२. सप्त धात्वग्नियों को प्रदीप्त कर साररूप धातुओं का निर्माण करना।

३. लाल, हरा व नीला - इन तीन प्रमुख रंगों द्वारा क्रमशः कफ, पित्त व वात इन त्रिदोषों को संतुलित रखना।

४. स्थूल व सूक्ष्म मलों का उत्सर्जन करना।

लाल, हरे व नीले रंगों के कार्य :

लाल रंग उष्ण, उत्तेजक व शक्तिदायक है। इसमें शक्तिहीन, गतिहीन अंगों की जड़ता दूर कर उनमें चेतना उत्पन्न करने की व नस-नाड़ियों की जकड़न दूर करने की अद्भुत क्षमता है। इसका प्रभाव विशेषरूप से छाती एवं पेट के अंगों - यकृत (लीवर), गुर्दे (किडनियाँ), आमाशय, आँतें, फेफड़े व स्नायुओं पर पड़ता है। यह आयोडीन की कमी की पूर्ति व रक्तकणों (हीमोग्लोबिन) की वृद्धि करता है। श्वास, खाँसी, क्षय आदि कफजन्य विकार, अजीर्ण, अम्लपित्त, उदरवायु आदि मंदाग्निजन्य रोग, लकवा, गठिया, जोड़ों का दर्द, वृद्धावस्था की कमजोरी, स्नायुओं की दुर्बलता, रक्ताल्पता एवं निम्न रक्तचाप में लाल रंग की किरणें अद्भुत लाभ पहुँचाती हैं।

हरा रंग समशीतोष्ण, शरीर से मल एवं विजातीय द्रव्यों को बाहर निकालनेवाला व रक्तशोधक है। यह मन में प्रसन्नता व उत्साह लाता है। त्वचा, कमर से नीचे के अंग व मल-मूत्र निष्कासक अंगों पर हरे रंग का विशेष प्रभाव पड़ता है। यह नेत्रों के लिए भी हितकारी है। पुराना कब्ज, प्रमेह, किडनी फेल्युअर आदि मूत्रविकार, हृदयरोग, त्वचाविकार, दूषित घाव तथा उच्च रक्तचाप में हरे रंग की किरणें खूब लाभदायी हैं।

नीला रंग शीतल, शांतिदायक व कीटाणुनाशक है। यह मानसिक तनाव को दूर करता है। मस्तिष्क व नाड़ी संस्थान (Nervous System) को बल देता है। यह आध्यात्मिक विकास व ध्यान में भी सहायक है। गला, गर्दन, मुँह, मस्तिष्क एवं सिर पर इसका विशेष प्रभाव पड़ता है। शरीर में दाह-जलन, प्यास, अत्यधिक मासिक रक्तस्राव आदि पित्तप्रकोपजन्य रोग, सिरदर्द, अनिद्रा, बाल झड़ना व सफेद होना, मिर्गी, पागलपन आदि मानसिक विकार व मस्तिष्क विकारों को शांत करने में यह विशेष प्रभावशाली है।

सूर्यकिरण-चिकित्सा की सामान्य पद्धतियाँ :

१. अर्घ्यदान : सूर्य को अर्घ्य देते समय जलधारा को पार करती हुई सूर्य की किरणें हमारे सिर से पैरों तक पूरे शरीर पर पड़ती हैं। इससे हमें स्वतः ही सूर्यकिरणसिद्ध जल-चिकित्सा का लाभ मिलता है।

२. सूर्यस्नान : सूर्योदय के समय कम-से-कम वस्त्र पहनकर, सूर्य की ओर मुख करके सूर्य की किरणें नाभि पर पड़ें इस तरह बैठ जायें। फिर आँखें मूँदकर ऐसा संकल्प करें कि 'सूर्य की सप्तरश्मियाँ मेरी नाभि में प्रवेश कर रही हैं। मेरे शरीर में सूर्य की तेजोमय शक्ति का संचार हो रहा है। सूर्यनारायण की जीवनपोषक शक्ति से मेरे रोम-रोम में रोगप्रतिकारक शक्ति का अतुलित संचार हो रहा है। ॐ... ॐ... ॐ...'

इस प्रकार आठ मिनट सूर्य की ओर मुख व दस मिनट पीठ करके बैठें। समय अधिक न हो व धूप तेज न हो इसकी सावधानी रखें। लेटकर सूर्यस्नान करें तो और अच्छा।

३. सूर्यनमस्कार : प्रातः सूर्य की ओर मुख करके मंत्रोच्चारण के साथ किया गया सूर्यनमस्कार एक परिपूर्ण व्यायाम है। एक सूर्यनमस्कार में दस आसनों का समावेश है। सूर्यनमस्कार करते समय शरीर के सभी अंगों पर सूर्य की किरणें पड़ती हैं। नियमित सूर्यनमस्कार शरीर को हृष्ट-पुष्ट व बलवान बनाता है। इससे व्यक्तित्व तेजस्वी-ओजस्वी व प्रभावशाली होता है। ❑

आसारामजी बापू सच्चे संत हैं

मैं एक सोशल जर्नलिस्ट हूँ। एक बार रिसर्च के लिए मैं आसारामजी बापू को मिला था। आज हिन्दुओं के संत आसारामजी बापू के बारे में मीडिया द्वारा झूठी बातें फैलायी जा रही हैं। मैं मुसलिम हूँ, फिर भी आसारामजी बापू पर लग रहे आरोपों से दुःखी हूँ। आसारामजी सच्चे फकीर हैं। यदि वे सच्चे औलिया न होते तो आज इतना अपमान होने के बाद भी चुप न बैठते। हम जानते हैं नेता लोग क्या करते हैं।

उन्होंने मुझे कहा था : ''अल्लाह का दीदार करना है तो ध्यान कर !'' मैंने कहा : ''ध्यान नहीं आता।'' तो उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखते हुए कहा : ''तू नमाज के टाइम ध्यान करेगा तो लगने लगेगा। बस, एक बार मुझे याद करके मुझको हेल्प के लिए पुकारना।'' मुझे पूरा विश्वास नहीं था फिर भी मैंने वैसा ही किया और उस दिन मैंने अपने-आपमें अवर्णनीय शांति पायी। मेरी स्मोकिंग की आदत और मांसाहार भी छूट गया। मेरी सब गंदी आदतें छूट गयीं। मेरा पूरा जीवन आनंद से भर गया। ये मीडियावाले रुपयों के लिए कुछ भी कर सकते हैं। बापू की ओरा से भी साबित होता है कि बापू सच्चे औलिया हैं। इतने आरोपों के बाद भी वे स्वस्थ, शांत और प्रसन्न हैं, यह उनकी बड़ी समता का परिचय है।

मैं उदार मुसलमान हूँ। मुझे अल्लाह की सच्ची खबर बापू से ही मिली है। हिन्दुओं को और सभीको बापूजी का आदर करना चाहिए। **हजारों को उल्लू बनाना भी मुश्किल है, यहाँ तो बापू ने तीन-चार करोड़ लोगों को अपना बनाया है। मैंने देखा आश्रम में प्रेम, सेवा, भक्ति और शांति का संदेश दिया जाता है।**

बापू ने कभी भी किसीकी कोई जमीन प्रेस (हड़प) नहीं की है। यह भी उनको बदनाम करने की साजिश है। यदि आपको ट्रस्ट (विश्वास) नहीं है तो आप खुद चेक कीजिये। मीडिया की आँखों से मत देखो, सत्य को पहचानो ! इसलिए मेरी राय से करोड़ों लोगों के दिल में अभी भी राज करनेवाले, सबका मंगल सोचनेवाले आसारामजी बापू सबसे बड़े गुजराती, हिन्दुस्तानी और इन्सान हैं। खुदा हाफिज...

- फारुक मोहम्मद, सूरत (गुज.)।

(www.jeetegakaun.in/sabsebadagujarati/thread.php?id=10-103, on Morari bapu forum)

संस्था समाचार

३० जनवरी से १ फरवरी तक सायन, मुंबई के सोमैय्या मैदान में भगवत्सुख, भगवत्शांति, भगवन्माधुर्य के रस में छक गये मुंबईवासी। **२९ जनवरी** को पूज्य बापूजी की अध्यक्षता में हुए 'धर्म रक्षा मंच' के संत सम्मेलन में उमड़े जनसैलाब ने बाद में सत्संग के तीनों दिन थमने का नाम ही नहीं लिया। पहले दिन से दूसरे दिन और दूसरे से तीसरे व चौथे दिन सत्संगियों की संख्या बढ़ती ही चली गयी।

कर्मप्रवाह में तेजी से बह रहे मुंबईवासियों को पूज्य बापूजी ने सहज और स्वस्थ जीवन तथा समता व आत्मविश्रांति का मार्ग बताते हुए कर्मयोग की तरफ मोड़ा और कहा : ''आपकी रग-रग परमात्मप्रेम से पवित्र हो जाय, मैं वह चीज देना चाहता हूँ। आपका हर कर्म भगवान की बंदगी हो जाय, मैं ऐसा कर्मयोग देना चाहता हूँ। आपकी भक्ति मरने के बाद नहीं जीते-जी सफल हो जाय, मैं ऐसी भक्ति देखना चाहता हूँ और आपका ज्ञान ऐसा हो जाय कि मृत्यु का बाप भी आ जाय तो आपके ज्ञान को न छीन सके, मृत्यु के सिर पर पैर रखकर आप मुक्त हो जाओ, मैं ऐसा खजाना देना चाहता हूँ।''

२ व ३ फरवरी को रायता आश्रम, जि. ठाणे (महा.) में सत्संगामृत बरसा। जगह-जगह सत्संग-स्थलों की आवश्यकता पर जोर देते हुए समाज के दूषित हो रहे मानसिक स्वास्थ्य को संस्कारी व सुदृढ़ बनाने का उपाय लोकहितैषी गुरुदेव ने बताया। पूज्यश्री बोले : **''जैसे थिएटर बढ़ते हैं तो चंचलता बढ़ती है, होटल बढ़ते हैं तो चटोरापन बढ़ता है, अस्पताल बढ़ते हैं तो मरीज बढ़ते हैं, ऐसे ही सत्संग-स्थल, सत्संग-कार्यक्रम बढ़ते हैं तो सज्जन बढ़ते हैं। अच्छाई छुपी हुई है सबके भीतर, सत्संग उसको जगाता है।**

बरसात होती है न, तो घास, कंटक, कई फालतू पेड़-पौधे हो जाते हैं लेकिन गुलाब नहीं खिलते। गुलाब वहीं खिलते हैं जहाँ कलम लगी होती है। ऐसे ही फालतू पिक्चरों से, इधर से, उधर से, वेबसाइटों से फालतू कचरा तो समाज में खूब मिलता है लेकिन ईश्वर के साथ जोड़नेवाली सत्संगरूपी कलम जब लगती है तब परमात्मा की सुवासवाले फूल खिलते हैं।''

५ व ६ तारीख का सत्संग **पुणे (महा.) वासियों** के भाग्य में रहा। देवनगरी **आलंदी** स्थित आश्रम में आयोजित इस सत्संग-कार्यक्रम में दोनों दिन श्रद्धा-भक्ति से भरपूर यहाँ के श्रद्धालुओं को भगवान के तात्त्विक स्वरूप का बोध कराते हुए पूज्य बापूजी ने भक्ति को तत्त्वज्ञान का सम्पुट दिया। बापूजी ने कहा : ''ऐसा नहीं कि उधर (ऊपर आकाश में) बैठकर कोई देखता है, वह यहाँ अंतर (हृदय) में ही बैठकर देखता है। बोलते हैं : 'उधर (ऊपर) भगवान बैठे हैं।' उधर बेचारे को सर्दी नहीं लगेगी ? हवा में, आँधी-तूफान में उधर तकलीफ नहीं हो जायेगी ? फिर भी क्यों बोलते हैं भगवान, अल्लाह ऊपर हैं ? क्योंकि जो नीचे के केन्द्र हैं वे संसार में ले जाते हैं और ऊपर के केन्द्र आत्मज्ञान-परमात्मज्ञान में ले जाते हैं। कामना, भय, लोभ, शोक ये नीचे के केन्द्रों में हैं इसलिए जब भगवान को, अल्लाह को पुकारते हैं तो नीचे की ओर हाथ करना अनुकूल नहीं होता और समता, प्रेम, शांति, आत्मानंद ये ऊपर के केन्द्रों में हैं इसलिए अल्लाह-ईश्वर की जब बात करते हैं या 'ओ गॉड ! मेरे अल्लाह ! मेरे प्रभु !' कहते हैं तो हाथ स्वाभाविक ही ऊपर उठते हैं। यह ऊपर के केन्द्रों की सौगात है। कभी भी अल्लाह-भगवान के विषय में हाथ नीचे नहीं जायेंगे। इसलिए ईश्वर, अल्लाह, गॉड को ऊपर बताया जाता है। ऊपर के केन्द्रों में सूझबूझ होती है।''

माघी पूर्णिमा का पर्व इस बार **इन्दौर (म.प्र.)** की झोली में रहा। **७ से ९ फरवरी तक** यहाँ पर पूर्णिमा दर्शन व सत्संग का भव्य आयोजन हुआ। अनेकों बाधाओं को पार करते हुए हर पूनम को गुरुदर्शन के लिए पहुँचनेवाले पूनमव्रतधारियों को बाधारहित साधना का गुर सिखलाते हुए पूज्यश्री बोले : ''श्वास अंदर जाय तो ॐ... बाहर आये तो एक... श्वास अंदर जाय तो आनंद, बाहर आये तो दो... यह श्वासोच्छ्वास की साधना है। 'मेरा आदमी भजन नहीं करने देता...' उसका बाप भी नहीं रोक सकता श्वासोच्छ्वास के भजन में। अंतरात्मा के भजन में कोई नहीं रोक सकता। **सोऽहम्...** 'सो' माने सब परिस्थितियों को जाननेवाला **वह चैतन्य,**

'अहम्' माने **मैं हूँ** । इससे परम भक्ति हो जायेगी, स्वाभाविक भगवद्विश्रांति, भगवत्प्राप्ति होगी !''

पूज्य बापूजी हमेशा कहते हैं कि मैं कोई भी सत्संग-कार्यक्रम की तारीख अपनी तरफ से नहीं देता, वह (परमात्मा) जो बुलवा देता है वही बोल देता हूँ । इसका प्रत्यक्ष उदाहरण **सुसनेर, जि. शाजापुर (म.प्र.)** के निवासियों को देखने को मिला । सुसनेर समिति द्वारा पूज्य बापूजी का सत्संग पाने हेतु पिछले १४ वर्षों से जारी तपस्या का फल उन्हें ८ व ९ दिसम्बर २००७ को मिला था । उस समय पूज्य बापूजी ने सहज भाव में कहा था : ''अब १४ वर्ष नहीं १४ महीने बाद आऊँगा ।'' और वास्तव में ही १४ महीने बाद १२ फरवरी २००९ को सुसनेर में पूज्यश्री का आगमन हुआ ।

जब यह बात बतायी गयी तब पूज्यश्री बोले : ''सचमुच १४ महीने हुए हैं ? भगवान ने क्या वचन रखा है ! मुझे पता नहीं था कि १४ महीने हुए कि १३ महीने हुए। मुझे लगा कि विष्णुपदी संक्रांति का सत्संग यहाँ देवें। भगवान मुझसे जो बुलवाता है वह स्वयं पूरा करवाता है, मुझे पता नहीं होता। मैं सच बोलता हूँ।''

गौप्रेमी पूज्य बापूजी ने यहाँ की गौशाला को भी भेंट दी, साथ ही भवानीमंडी जाते समय गौसेवा के पुण्यमय कार्य में संलग्न **सोयतकला, जि. शाजापुर** गौशाला को भी स्नेहभरी भेंट दी। गौसेवा को बोझ न समझकर कुशल नियोजन द्वारा गायों की सेवा करें तो गौरक्षा के साथ-साथ हमें आय का एक अच्छा स्रोत भी मिल सकता है, इस ओर ध्यान खींचते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''यह समझना कि हम गाय को खिलाते हैं, पोसते हैं गलतफहमी है । हम गाय को नहीं खिलाते, गाय हमें खिलाती है। गाय का मूत्र, गोबर आय का अच्छा साधन बन सकते हैं।'' यह प्रतिपादित करते हुए पूज्यश्री ने गौरक्षा व गौपालन के लिए जनमानस को प्रेरित किया ।

१४ व १५ फरवरी को **भवानीमंडी, जि. झालावाड़ (राज.)** तथा **१५ (शाम)** को **झालावाड़** में भक्तों ने सत्संग-सुधा का पान किया। झालावाड़ में दिये मात्र एक ही सत्र में उमड़ी अपार भीड़ को सच्ची विद्या का दान करते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''सच्ची विद्या तो उसीको मानते हैं जो आदमी को बंधनों से छुड़ा दे, दुःखों की दलदल से छुड़ा दे, सुखों की आसक्ति से छुड़ा दे । **सा विद्या या विमुक्तये ।** मनुष्य को वह विद्या पा लेनी चाहिए जिससे दुःख कट जायें, सुखस्वरूप आत्मा का प्रकाश हो जाय और जो विद्या जीव को अनाथ होने से बचाकर अपने नाथ से मिला दे ।''

१६ व १७ फरवरी को **धुलिया (महा.)** के सत्संगप्रेमियों को सत्संग का सुअवसर प्राप्त हुआ । **१७ (शाम)** को पूज्य बापूजी ने **दोंडाईचा, जि. धुलिया** की गौशाला को भी भेंट दी एवं सत्संग प्रदान किया । **१८ तारीख** की **सुबह खान्देश (धुलिया, नंदुरबार एवं जलगाँव) निवासियों** के लिए नये रंग लेकर आयी । होली के पहले ही अपने प्यारे गुरुदेव के हाथों रँगने का परम सौभाग्य प्राप्त किया **प्रकाशा, जि. नंदुरबार (महा.)** के भक्तों ने । होली खेलने के लिए यहाँ विशेष व्यवस्था की गयी थी । प्रकाशा व आस-पास के शहरों से बड़ी संख्या में उमड़े श्रद्धालुओं ने इसका आनंद लिया ।

यहाँ से बापूजी ने नासिक के लिए प्रस्थान किया तो मार्ग में दर्जनों जगहों पर बड़ी संख्या में लोग एकत्रित होकर पूज्यश्री के स्वागतार्थ घंटों से प्रतीक्षा कर रहे थे । उन श्रद्धालुओं की तपस्या देख पूज्यश्री ने भी जगह-जगह रुककर उन्हें सत्संगामृत से तृप्त किया ।

२० से २३ फरवरी तक **'महाशिवरात्रि महोत्सव' नासिक (महा.)** में सम्पन्न हुआ । इस पावन पर्व को सद्गुरु के सान्निध्य में मनाने के लिए लाखों-लाखों लोगों का जनसैलाब उमड़ पड़ा । इस महासत्संग में देश भर से आये हजारों विद्यार्थियों ने भी भाग लिया । भारत भर में आयोजित 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिता' के अंतिम स्तर की परीक्षा यहाँ ली गयी व विजेताओं को पूज्य बापूजी के करकमलों से स्वर्ण पदक, रजत पदक, नकद राशि, स्मृतिचिह्न आदि प्राप्त हुए ।

शिवस्वरूप सद्गुरुओं की हर बात शिवमय, कल्याणमय होती है इस तथ्य को उजागर करते हुए पूज्यश्री बोले : ''हुक्के (तम्बाकू पीने का पुराने जमाने का साधन) में तम्बाकू डालो, चाहे नहीं डालो लेकिन पुराने हुक्के को खींचोगे तो तम्बाकू की बदबू आयेगी और फूँक मारोगे तो भी तम्बाकू की ही बदबू निकलेगी । ऐसे ही जिसके मन में संसार की सत्यता है, संसार की आसक्ति है वह कितना भी अच्छा

काम करे, बदबू तो वासना की ही आयेगी और संत भगवान का चिंतन करते-कराते बीच में संसार की बात करें तो भी सुगंध तो भगवान की ही आयेगी।''

२५ फरवरी की **सुबह बीड (महा.)** में सत्संग हुआ। **२५ व २६ तारीख** को **उदगीर, जि. लातूर (महा.)** में सत्संग-सरिता प्रवाहित हुई। यहाँ पर श्रद्धालुओं का सैलाब ऐसा उमड़ा कि देखनेवालों को भी आश्चर्य हो। पहले ही सत्र में सत्संग-पंडाल छोटा साबित हुआ। यहाँ के साधकों को साधना के साथ ही स्वास्थ्य भी पुष्ट हो, ऐसे नुस्खे पूज्यश्री ने बताये।

नांदेड़ (महा.) के निवासियों की लगातार चल रही प्रार्थनाएँ फलीभूत हुईं और **२७ फरवरी से १ मार्च** तक ३ दिन का सत्संग उनके भाग्य में रहा। विविध विद्यालयों से आये हजारों विद्यार्थियों ने भी यहाँ सत्संग व दीक्षा का लाभ लिया।

पाश्चात्य अंधानुकरण से तेजी से समाज में फैल रहे सांस्कृतिक प्रदूषण को दूर करने हेतु पूज्यश्री ने उपस्थितों को सनातन संस्कृति की महिमा से अवगत कराया व सांस्कृतिक जागरण हेतु प्रोत्साहित किया।

२ मार्च की **शाम** का सत्र **भोकर, जि. नांदेड़** में हुआ। शृंगी ऋषि के प्रदीर्घ सान्निध्य से पुनीत हुई इस धरा पर नवनिर्मित आश्रम में पूज्यश्री के प्रथम पदार्पण पर बड़ी संख्या में जनसमूह एकत्र हुआ था। सामाजिक व पारिवारिक जीवन को सुखमय बनाने की कुंजी देते हुए पूज्य बापूजी ने उन्हें परस्पर सामंजस्य का मार्ग बताया।

पूज्यश्री के सत्संग-कार्यक्रमों में यह विशेषता बारम्बार देखी गयी कि छोटे-छोटे नगरों में हुए इन सत्संगों में भी उपस्थित श्रद्धालुओं की संख्या अपार थी। साथ ही जिस मार्ग से पूज्यश्री गुजरते, वहाँ के गाँव-गाँव में लोग पूज्यश्री का स्वागत करने के लिए घंटों भर रास्ते पर इंतजार में खड़े रहते। पूज्य बापूजी के मुखारविंद से निःसृत सत्संगामृत की शीतल धाराएँ देश के गाँव-गाँव, कोने-कोने तक पहुँचकर जन-मन को पोषित कर रही हैं। हजारों विद्यार्थी पूज्यश्री से दीक्षा प्राप्त कर व्यावहारिक सफलताओं के साथ ही नैतिक व आध्यात्मिक ऊँचाइयों की तरफ बढ़ रहे हैं। स्पष्ट दिखायी दे रहा है - 'भारत अब करवट लेगा।'

ॐ नारायण नारायण नारायण नारायण... ❑

पकड़ी तैंतीस लाख की चोरी

२२ फरवरी २००९ को मैं पूज्य बापूजी का शिवरात्रि का लाइव सत्संग देख रहा था। मुझे अचानक ऐसा महसूस हुआ मानो, बापूजी मुझे कह रहे हों : 'अपने मकान की छत पर जा।' पहले तो मैंने मन का भ्रम मानकर ध्यान नहीं दिया पर फिर ऐसा एहसास हुआ कि बापूजी बहुत गंभीर होकर बोल रहे हैं : 'सुनता नहीं ! चल उठ !!'

मैं तुरंत ही छत पर पहुँचा। मेरी छत से सटकर 'स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर' की दुर्गापुरा शाखा की छत है। मैंने देखा हमारी व बैंक की छत से सात फीट नीचेवाली टिन की छत पर एक व्यक्ति सिर नीचे किये बैठा है। मैंने पूछा : ''हरि ॐ... कौन हो तुम ?'' वह अपना चेहरा छुपाते हुए पेट के बल लेट गया। रविवार का दिन, बैंक में चौकीदार भी नहीं रहता... ऐसे में उस व्यक्ति का संदिग्ध आचरण और बापूजी का गंभीर इशारा... मैं 'चोर-चोर' चिल्लाया पर वह व्यक्ति छटक गया। अचानक मेरी नजर बैंक की छत पर पड़ी तो देखा कि एक अटैची व उसके ऊपर एक भरा हुआ बैग रखा है। मैंने बैंक मैनेजर को उनके मोबाइल पर सूचना दी और उन्होंने पुलिस को सूचित किया। पुलिस ने सब चेक किया तो बैग व अटैची में तैंतीस लाख साठ हजार रुपये नकद मिले, जो बैंक से चुराये गये थे। बड़े-बड़े पुलिस अधिकारियों ने आकर मेरी पीठ थपथपायी। उस समय मेरा हृदय गुरुचरणों में श्रद्धावनत हो गया, मुझे संत तुलसीदासजी का दोहा याद आया :

देनहार कोउ और है, देत रहत दिन रैन।
लोग भरम हम पे करें, तातें नीचे नैन ॥

मैंने उन्हें बताया कि मुझे यह प्रेरणा देनेवाले मेरे गुरुदेव परम पूज्य बापूजी हैं। इसमें मेरी कोई बड़ाई नहीं है। मेरा तो बस यही सौभाग्य है कि ऐसे समर्थ सद्गुरु से मुझे मंत्रदीक्षा मिली।

शम्भुलाल सेन

शम्भुलाल सेन, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)।
मोबाइल नं. : ०९९२८१२६६५७.
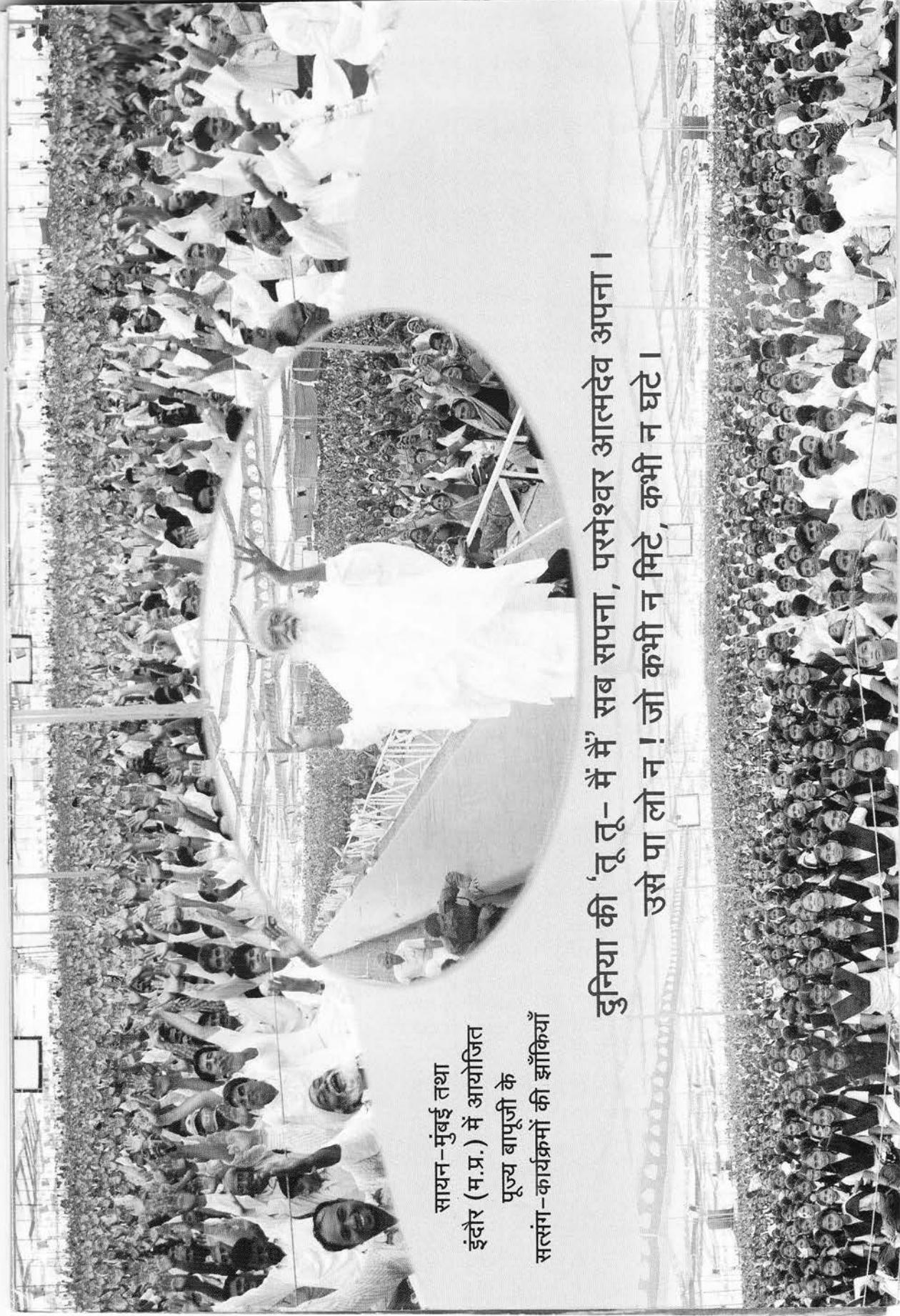
सायन-मुंबई तथा
इंदौर (म.प्र.) में आयोजित
पूज्य बापूजी के
सत्संग-कार्यक्रमों की झाँकियाँ

दुनिया की 'तू तू- मैं मैं' सब सपना, परमेश्वर आत्मदेव अपना ।
उसे पा लो न ! जो कभी न मिटे, कभी न घटे ।

राष्ट्र-जागृति का शंखनाद :
धर्म रक्षा मंच - संकल्प सभा

1 March 2009
RNP. NO. GAMC 1132/2009-11
WPP LIC NO. CPMG/GJ/41/09-11
RNI NO. 48873/91
DL(C)-01/1130/2009-11
WPP LIC NO. U (C) - 232/2009-11
MH/MR-NW-57/2009-11
MR/TECH/WPP-42/NW/09-11
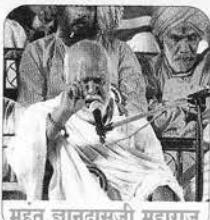
महंत ज्ञानदासजी महाराज

ईसाइयों द्वारा जो धर्मान्तरण हो रहा है वह बाह्य आतंकवाद से कम-से-कम लाख गुना हो रहा है ।
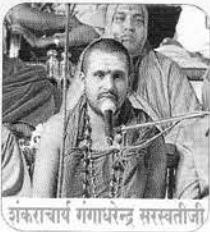
शंकराचार्य गंगाधरेन्द्र सरस्वतीजी

भारत के मुसलिम मातृधर्म में वापस आयें, हमारा दरवाजा खुला है ।
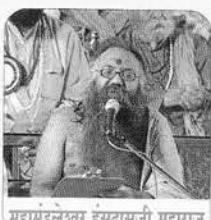
महामंडलेश्वर हंसदासजी महाराज

मैं 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश - युवाधन सुरक्षा' पुस्तक की बहुत प्रशंसा करता हूँ ।

महंत हरिगिरिजी महाराज

मीडिया द्वारा सत्य न बताकर सिर्फ लोगों को गुमराह करने का प्रयास किया गया ।

म. युगपुरुष स्वामी परमानंदजी

जो धार्मिक, आध्यात्मिक लोगों को भी मारने से नहीं कतराते, उनके लिए गुरु गोविंदसिंहजी की और राम की जरूरत पड़ती है ।

साध्वी ऋतम्भराजी

वंदनीयों का वंदन होना चाहिए और दंडनीयों को दंड मिलना चाहिए ।

जगद्गुरु श्री रामदयालदासजी

धर्मान्तरण द्वारा रोज हमला हो रहा है, इसे कौन सँभालेगा ?
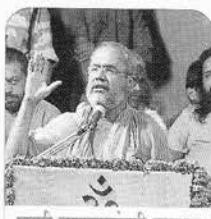
स्वामी परमात्मानंदजी महाराज

हमारे राजकीय नेतृत्व में संकल्पशक्ति ही नहीं है कि वह आतंकवाद का सामना करे ।

स्वामी चिन्मयानंदजी महाराज

अब हमें 'सेक्युलर' संविधान नहीं, आध्यात्मिक संविधान चाहिए ।

श्री नृत्यगोपालदासजी महाराज

सभी भारतवासी एक हों, धर्म की रक्षा के लिए अग्रसर हों ।

स्वामी चिदानंद सरस्वतीजी

भारत की जनता अपने वोटबल से 'सेक्युलर' स्टेट नहीं बल्कि 'स्पिरिचुअल' स्टेट बनाये ।

स्वामी कृष्णमणिजी महाराज

हम यह संकल्प लें कि 'हम सभी संगठित होंगे, एक होंगे, एक रहेंगे ।'

श्री रामकमलदासजी वेदांती

धर्मविहीन राजनीति विधवा है । इस राष्ट्र में राजनीति धर्मयुक्त होकर ही चल सकती है ।

महंत रामेश्वरदासजी

मद में चूर होकर कोई भगवान का भजन करनेवालों को असमर्थ न मान ले ।
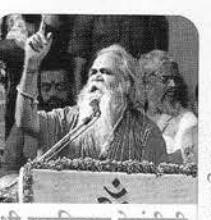
श्री रामबिलास वेदांतीजी

जो राम का, हिन्दुओं का अपमान करें उनको हिन्दुस्तान में रहने का अधिकार नहीं होना चाहिए ।

महामंडलेश्वर स्वामी देवेन्द्रानंदजी

जो बदल देते रहे हैं नक्शा, इन्सान की किस्मत की लकीरों का । यह देश है संत आसारामजी और धर्म रक्षा मंच के सभी संतों का, वीरों का ।।

मुनि विमलसागरजी

अगर आप सो गये तो लुट गये ।
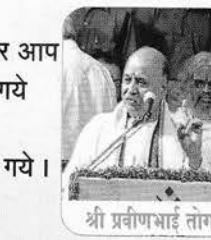
श्री प्रवीणभाई तोगड़िया

हिन्दू आतंकवादी नहीं हो सकता पर रावण जैसे आतंकवादियों का संहार करनेवाला नर-नायक राम इस धरती पर पैदा हुआ करता है ।

Posting at PSO Ahmedabad between 25th of preceding month to 10th of current month. * Posting at ND. PSO on 5th & 6th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.